

#### असाधारण

#### **EXTRAORDINARY**

भाग I-खण्ड 1

PART I—Section 1

#### प्राधिकार से प्रकाशित

#### PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 236] नई दिल्ली, मंगलवार, अक्तूबर 7, 2014/आश्विन 15, 1936 No. 236] NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 7, 2014/ASVINA 15, 1936

### वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

#### अधिसूचना

नई दिल्ली, 2 अक्तूबर, 2014

### (अंतिम जांच परिणाम)

विषय : चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डायक्लोफेनक सोडियम के आयातों पर अधिरोपित पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा का अंतिम जांच परिणाम – के संबंध में।

सं. 15/3/2013-डीजीएडी: समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क प्रशुल्क अधिनियम, 1975 और उसके अंतर्गत बने सीमा-शुल्क प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए।

### क. मामले की पृष्ठभूमि

1. समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क प्रशुल्क अधिनियम,1975 (जिसे एतद्पश्चात् अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन एर पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतद्पश्चात् पाटनरोधी नियमावली या नियमावली कहा जाएगा) को ध्यान में रखते हुए चीन जन.गण. (जिसे एतद्पश्चात संबद्ध देश कहा जाएगा) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डायक्लोफेनक सोडियम (जिसे एतद्पश्चात् डीएफएस या संबद्ध वस्तु कहा जाएगा) के

3979 GI/2014 (1)

आयातों पर निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतद्पश्चात् प्राधिकारी कहा जाएगा) द्वारा दिनांक 29 मई, 2008 की अंतिम जांच-परिणाम अधिसूचना संख्या 14/4/2007-डीजीएडी के तहत मूल रूप से पाटनरोधी शुलक की सिफारिश की गई थी और यत:, केंद्रीय सरकार ने दिनांक 30 जुलाई, 2008 की अपनी अधिसूचना संख्या 91/2008-सीमा शुल्क के तहत दिनांक 10 अप्रैल, 2008 से निर्णायक पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित किया था।

- 2. यत:, मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड और मैसर्स अमोली आर्गनिक्स प्राइवेट लिमिटेड ने प्राधिकारी के समक्ष अधिनियम एवं पाटनरोधी नियमावली के अनुसार एक विधिवत साक्ष्यांकित आवेदनपत्र चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित, "डायक्लोफेनक सोडिया" के पाटन का आरोप लगाते हुए विधिवत साक्ष्यांकित एक आवेदनपत्र दायर किया है और प्राधिकारी से मौजूदा पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने एवं उसकी निरंतरता बनाए रखने का अनुरोध किया है।
- 3. और तत्पश्चात् प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार प्रभावी शुल्क के सतत अधिरोपण की जरूरत की समीक्षा करने और यह जांच करने के लिए कि क्या उक्त शुल्क को समाप्त कर देने से पाटन एवं क्षिति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, निर्णायक समीक्षा जांच प्रारंभ करते हुए दिनांक 09 अप्रैल, 2013 को भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी की।
- 4. और यत:, दिनांक 30 जुलाई, 2008 की अधिसूचना संख्या 91/2008-सीमाशुल्क के तहत यथा अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क केंद्रीय सरकार द्वारा अधिनियम की धारा 9(क)(5) में उल्लिखित शर्तों के अनुसार दिनांक 13 नवम्बर, 2013 की अधिसूचना संख्या 31/2013-सीमाशुल्क (एडीडी) के तहत दिनांक 09 अप्रैल, 2014 तक बढ़ा दिया था।

#### ख. प्रक्रिया

- इस जांच में निम्नलिखित वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है :
  - (i) प्राधिकारी को चीन जन गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित डायक्लोफेनक सोडियाम के आयातों पर प्रभावी शुल्क की समीक्षा करने और उसकी निरंतरता बनाए रखने के लिए घरेलू उद्योग के रूप में मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड और मैसर्स अमोली आर्गनिक प्राइवेट लिमिटेड से विधिवत साक्ष्यांकित एक निर्णायक समीक्षा आवेदनपत्र प्राप्त हुआ। याचिकाकर्ताओं ने इस संबंध में प्रथम दृष्टया साक्ष्य प्रस्तुत किए और प्रभावी पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने एवं उसकी निरंतरता बनाए रखने का अनुरोध किया।
  - (ii) प्राधिकारी ने नई दिल्ली स्थित चीन के राजदूतावास को यह सूचना दी कि उन्हें घरेलू उद्योग से एक याचिका प्राप्त हुई है जिसमें चीन जन गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्घ वस्तु के आयातों के विरूद्ध निर्णायक समीक्षा जांच प्रारंभ करने का अनुरोध किया गया है।
  - (iii) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ताओं द्वारा जांच की शुरूआत को न्यायोचित ठहराते हुए प्रस्तुत प्रथम दृष्टया साक्ष्यों के आधार पर चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों पर एक निर्णायक समीक्षा जांच दिनांक 09 अप्रैल, 2013 की जांच शुरूआत अधिसूचना के तहत प्रारंभ की।
  - (iv) वर्तमान समीक्षा का दायरा दिनांक 29 मई, 2008 की अधिसूचना सं.14/4/2007-डीजीएडी के सभी पहलुओं को कवर करता है।
  - (v) नई दिल्ली स्थित चीन के राजदूतावास इस जांच की शुरूआत के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार सूचित किया गया।
  - (vi) प्राधिकारी ने दिनांक 09 अप्रैल, 2013 की जांच शुरूआत अधिसूचना की प्रतियां भारत स्थित चीन के राजदतावास. संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों. भारत संबंधित ज्ञात आयातों तथा अन्य हितबद्ध

पक्षकारों को, प्राधिकारी को उपलब्ध कराई गई सूचना के अनुसार प्रेषित की। इन पक्षकारों से विहित स्वरूप और ढंग से अपने प्रत्युत्तर दायर करने तथा निर्धारित समय-सीमा के अंदर प्राधिकारी को अपने विचारों से लिखित रूप से अवगत कराने का अनुरोध किया गया। संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को निर्यातक प्रश्नावली और बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा प्रश्नावली भी भेजी गईं। चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और निर्यातक प्रश्नावलियां, ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची सहित भारत स्थित चीन के राजदूतावास को भी भेजी गई और उनसे संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा संबद्ध देशों के अन्य निर्यातकों/उत्पादकों को यह सुझाव देने का अनुरोध किया गया कि वे विहित समय-सीमा के अंदर प्रश्नावलियों का प्रत्युत्तर भेज दें।

(vii) संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां संगत सूचना प्रदान करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार भेजी गई :

शानडांग यिबाओ बायोलोजिक्स कंपनी, लिमिटेड,	शेनझेन झिजुन फार्मास्युटिक्ल कंपनी लिमिटेड, ब्लाक 5,
जिंगलांग इंडस्ट्रियल गार्डन जिंगलांग झुआंग टाउन,	बागुआलिंग इंडस्ट्रियल डिस्ट्रिक्ट शेनझेन, चीन जन गण.
यान्झोऊ सिटी शांडांग प्रांत, चीन	
कम्फर्टकाम्स ग्रुप कंपनी लिमिटेड, 26डी, डुशिहुआयुयान,	शांक्सी हैझेंग साइन्टिफिक टेक एंड ट्रेड कंपनी लिमिटेड,
जिंगझोऊ रोड, फुटिआन जिला, शेन्झेन, गुआंगडांग, चीन	6/एफ, बिल्डिंग 1, 17 लिउ लेन, मिंगजे डिस्ट्रिक्ट, तैयुआन
	सिटी, शांक्सी प्रांत, चीन
जीबीबी ग्रुप कंपनी लिमिटेड,	स्काईरन इंटरनेशनल ग्रुप सनशाइन कारपोरेशन, 50,
डेवलपमेंट जोन, बिनझोऊ, शानडांग, चीन	झोंग्हुआ रोड, नानजिंग, जियांग्सु, चीन
हीबेई जिहेन्ग (ग्रुप) फार्मास्युटिक्स कंपनी लिमिटेड, 368,	शानडांग रियंग फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड, 6,
जियान्सी स्ट्रीट, हेंगसुयी सिटी, हीबेई, चीन	एर्लांगशान रोड, यियुआन काउंटी शानडांग प्रांत, चीन
हीबेई वियांग एनियल फार्मास्युटिकल कंपनी लिमिटेड,	वुहान लिहुआ इंटरनेशनल ट्रेड कारपोरेशन,
383 ईस्ट हेपिंग रोड, शिजियाझुआंग सिटी, हीबेई प्रांत,	1205 बी जिउयुन गार्डन, 34, जियांगहान नार्थ रोड, वुहान
चीन	सिटी, हुबेई प्रांत, चीन
मेडिको (शिजियाझुआंग) इंडस्ट्रीज एंड ट्रेक कंपनी	दि टीएनएन डेवलपमेंट लिमिटेड,
लिमिटेड, कक्ष 7जी, ब्लाक-ए, सिटी गार्डन, 159,	कक्ष 2901, रेनवो बिल्डिंग, 23 रेनमिन रोउ, झोंग्शान
जिनहुआ रोड, शिजियाझुआंग सिटी, हीबेई प्रांत, चीन	जिला, डालिआन सिटी, लायनिंग प्रांत, चीन

- (viii) उपर्युक्त निर्यातक/उत्पादक ने और किसी भी निर्यातक/उत्पादक प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर नहीं किया।
- (ix) भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों, प्रयोक्ताओं और एसोसिएशनों को भी प्रश्नाविलयां जरूरी सूचना प्रदान कराने के लिए प्रेषित की गई :

नाटको फार्मा लिमिटेड, नाटको हाउस, रोड संख्या 2, बन्जारा	यूनीबयस लैब्स लिमिटेड, 5, सी-6, पूनम दर्शन पूनम
हिल्स, हैदराबाद	नगर, अंधेरी (पूर्व), मुंबई -400093
मार्कसन्स फार्मा लिमिटेड, कारपोरेट आफिस 601-622, छठा	
तल, चिन्तामणि प्लाजा, मोहन स्टूडियो कम्पाउंड, अंधेरी कुर्ला	
रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई-400099	

- (x) इस जांच शुरूआत अधिसूचना के प्रत्युत्तर में किसी भी आयातक, प्रयोक्ता या एसोसिएशन ने आयातक प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर नहीं किया।
- (xi) जांच की अवधि और उसके पूर्ववर्ती तीन वर्षों की अवधि के लिए आयात आंकड़े वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय से प्राप्त किए गए।
- (xii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय पाठ की प्रतियां पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए रखी गई एक सार्वजनिक फाइल में उपलब्ध कराई।
- (xiii) उन निर्यातकों, उत्पादकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारी द्वारा सहयोग न करने वाले हितबद्ध पक्षकारों के रूप में माना गया, जिन्होंने न तो प्राधिकारी को प्रत्युत्तर दिया और न ही इस जांच से संबंधित कोई संगत सूचना उपलब्ध कराई।
- (xiv) प्राधिकारी ने घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना की उत्पादन लागत और भारत में संबद्ध वस्तु की गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करने के लिए अनुबंध-III में विनिर्दिष्ट दिशानिर्देशों के आधार पर यथासंभव सीमा तक जांच की है जिससे कि यह सुनिश्चय किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से न्यूनतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (xv) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 8 जनवरी, 2014 को आयोजित एक सार्वजिनक मौिखक सुनवाई में अपने विचार मौिखक रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया। इस मौिखक रूप से अभिव्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में प्रेषित करें। तथापि, मौिखक सुनवाई के पश्चात, प्राधिकारी के रूप में नए पदधारी ने कार्यभार ग्रहण किया और इसलिए, नए प्राधिकारी ने भी दिनांक 05 अगस्त, 2014 को आयोजित एक मौिखक रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया गया। पुन:, इस मौिखक सुनवाई में भी केवल घरेलू उद्योग ने ही प्रतिभागिता की। घरेलू उद्योग से यह अनुरोध किया गया कि वह मौिखक रूप से अभिव्यक्त अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करें। तथापि, द्वितीय मौिखक सुनवाई के संदर्भ में, नाटको फार्मा लिमिटेड, हैदराबाद ने प्राधिकारी को, यह घोषणा करते हुए, एक पत्र प्रस्तुत किया कि वे संबद्ध वस्तु का आयात केवल निर्यात करने के प्रयोजन से ही करते हैं और यह कि वे उसका निर्यात अपने विदेशी ग्राहकों को उनके आर्डर प्राप्त होने पर ही कर रहे हैं। इसके समर्थन में, नाटको फार्मा लिमिटेड ने कुछ पोतलदान विलों और बीजकों की प्रतियां अपने पत्र के साथ प्रस्तुत की। घरेलू उद्योग से प्राप्त लिखित प्रस्तुतिकरणों में किए गए तर्कों पर इस जांच में, जहां संगत पाया गया, विचार किया गया था।
- (xvi) वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच की अवधि (पीओआई) अक्तूबर, 2011 से दिसम्बर, 2012 है। तथापि, क्षति विश्लेषण के लिए अप्रैल, 2009-मार्च, 2010, अप्रैल, 2010-2011, अप्रैल 2011-मार्च, 2012 और जांच की अवधि शामिल होगी। पाटन एवं क्षति की संभावना का निर्धारण करने के लिए जांच की अवधि के परे के आंकड़ों की जांच भी की गई है।
- (xvii) घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना एवं आंकड़ों का आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया।
- (xviii) घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान कराई गई सूचना की गोपनीयता के दावे की पर्याप्त के संबंध में जांच की गई। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने, जहां कहीं आवश्यक हुआ वहां, गोपनीयता के दावे को स्वीकार कर लिया और ऐसी सूचना को गोपनीय के रूप में माना गया और उसका अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकटन नहीं किया गया।

- (xix) जहां कहीं जांच की कार्रवाई के दौरान किसी हितबद्ध पक्षकार ने जरूरी सूचना तक पहुंच की मनाही कर दी है या अन्यथा आवश्यक सूचना प्रदान नहीं कराई है अथवा जांच में अधिक व्यवधान उत्पन्न किया है, जहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" पर भरोसा किया है।
- (xx) यह जांच पूरी करने की मूल तारीख 08.04.2014 थी। तथापि, प्राधिकारी के अनुरोध पर वित्त मंत्रालय ने यह तारीख 08.10.2014 तक बढ़ा दी है।
- (xxi) इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में इस जांच के अनिवार्य तथ्यों युक्त एक प्रकटन विवरण जो अंतिम जांच-परिणाम का आधार है, सभी हितबद्ध पक्षकारों को दिनांक 23.09.2014 को जारी किया गया था। इस प्रकटन विवरण का प्रत्युत्तर केवल घरेलू उद्योग ने दिया है और किसी भी विरोधी हितबद्ध पक्षकार ने इस प्रकटन विवरण का प्रत्युत्तर नहीं दिया है। घरेलू उद्योग द्वारा प्राप्त प्रकटन पश्चात विवरणों पर इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में संगत पाई गई सीमा तक विचार किया गया है।
- (xxii) इस अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना में \*\*\* हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का प्रतिनिधित्व करता है और इसलिए प्राधिकारी द्वारा उसे वैसा ही माना गया है।
- (xxiii) इस जांच की अवधि के लिए यूएस विनिमय दर वित्त मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार 53.04/रुपए = 1 यूएस डालर है।

## ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

## ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

6. विचाराधीन उत्पाद "डियक्लोफेनक सोडियम" (डीएफएस) है। विगत जांच और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में अंतर्ग्रस्त उत्पाद वही है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अपनी पिछली जांच में उपपादित किया गया है। डीएफएस एक आधारभूत आर्गेनिक रसायन होता है जिसे सामान्यत: सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। डीएफएस एक नॉन-स्टीरायडल एंटी इन्फ्लेमेटरी ड्रग (एनएसएआईडी) है, जिसे इन्फ्लेमेशन को कम करने के लिए लिया जाता है और यह जोड़ों में दर्द होने या अधिक चोट लगने की हालात में दर्द को कम करने के लिए लिया जाता है। डायक्लोफेनक को 2[(2, 6-डायक्लोरोफिनायली), एमिनो], बेंजीन एसिटिक एसिड मोनो सोडियम लवण, [(0-(6-डायक्लोरोएनिलिना), एमिनो], फिनायल एसिटिक एसिड सोडियम लवण के रूप में भी वर्णित किया जाता है। डीएफएस के दो ग्रेड होते है – टेबलेट और इंजेक्टेबल ग्रेड। दोनों ग्रेडों में कोई अधिक अंतर नहीं होता है। डीएफएस सफेद या हल्के पीले रंग का क्रिस्टलोइन पाउडर होता है जो प्रकृति में हल्का हाइग्रोस्कोपिक और जल में अल्प घुलनशील होता है। इस उत्पाद को सीमाशुल्क प्रशुल्क सं. 2942.0090 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और यह किसी भी रूप में वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु तथा संबद्ध देश से आयातित वस्तु दोनों ही नियमावली के अनुसार समान वस्तुएं हैं।

#### ग.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

- 7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीन गण.गण. के मूल का अथवा वहां से निर्यातित डायक्लोफेनक सोडियम है। डीएफएस एक आधारभूत आर्गेनिक रसायन होता है जिसे सामान्यत: सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। डीएफएस एक नॉन-स्टीरायडल एंटी इन्फ्लेमेटरी ड्रग (एनएसएआईडी) है, जिसे इन्फ्लेमेशन को कम करने के लिए लिया जाता है और यह जोड़ों में दर्द होने या अधिक चोट लगने की हालात में दर्द को कम करने के लिए लिया जाता है।
- 8. वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और प्राधिकारी यह संपुष्ट करते हैं कि वर्तमान जांच का दायरा वही है जो इस समय पाटनरोधी शुल्क को आकृष्ट करने वाले उत्पाद का दायरा है।

- 9. इस उत्पाद को भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार सीमाशुल्क प्रशुल्क शीर्षक संख्या 2942.0090 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि सीमाशुल्क एवं आईटीसी एचएस वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और यह किसी भी रूप में वर्तमान जांच के दायरे पर बाध्यकारी नहीं है।
- 10. वर्तमान निर्णायक समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पाद वही रहेगा जो मूल जांच में था।
- 11. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु तथा संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु दोनों समान हैं ओर वे वाणिज्यिक एवं तकनीकी रूप से प्रतिस्थानीय हैं। अत:, प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु प्रमुख नियमावली के नियम 2(घ) के अनुसार विचाराधीन उत्पाद के समान मंद हैं।

## घ. घरेलू उद्योग का दायरा

## घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

- 12. यह याचिका मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड और मैसर्स अमोली आर्गेनिक्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा दायर की गई है। देश में इस उत्पाद के कैरव कैमिकल्स लिमिटेड, मेडिटेक कैमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड और सारा एक्सपोर्टस लिमिटेड नामक तीन अन्य उत्पादक हैं, जिनमें से आखिरी दो ग्लोबस फार्माकेम के भाग है। ऐसा होते हुए भी इन मामलों में निर्णायक समीक्षा के आधार की जांच करना अपेक्षित नहीं होता है, यह प्रस्तुत किया जाता है कि जांच की अविध में कुल भारतीय उत्पादन में याचिकाकर्ताओं का हिस्सा लगभग 74 प्रतिशत है और इसलिए वह भाग कुल भारतीय उत्पादन एक बहुत बड़ा भाग बनता है।
- 13. पुन: यह नोट किया जाता है कि मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड ने अपनी सहबद्ध कंपनी, सुयश लैबोरेटरीज लिमिटेड के माध्यम से अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत प्रत्थत: संबद्ध वस्तु का आयात किया है। यह प्रस्तुत किया जाता है कि :-
  - (i) आरती ने इस विचाराधीन उत्पाद का अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत आयात किया है। चूंकि यह आयात, निर्यात के लिए किए गए थे, इसलिए, प्राधिकारी के पिछले निर्णयों पर विचार करते हुए, कंपनी को पात्र घरेलू उत्पादक के रूप में माना जाना चाहिए।
  - (ii) आरती ने व्यापारी के रूप में कार्य नहीं किया है। आरती ने आयातित उत्पाद का भारी प्रसंस्करण किया है और फिर उसका निर्यात अपने अनुप्रवाही उत्पाद के लिए किया है।
  - (iii) आरती ने वर्तमान याचिका का समर्थन किया है। आरती ने इस याचिका का विरोध नहीं किया है।
  - (iv) आरती का व्यवहार उन अन्य भारतीय उत्पादकों की तुलना में भिन्न नहीं है जो इस उत्पाद का आयात नहीं कर रहे हैं।
  - (v) आरती अभिभावी रूप से भारत में इस उत्पाद का विनिर्माण करता है। आरती इस उत्पाद का अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत केवल चीन से आयात करता है और उसका बाजार में अनुप्रवाही उत्पाद के रूप में बिक्री करने के लिए प्रसंस्करण करता है।
  - (vi) आरती पाटन से लाभ उठाने के प्रयोजन से आयातों का आश्रय नहीं लेता है। कंपनी का थ्रस्ट अपने उत्पादन पर ही बना हुआ है। आरती ने इस उत्पाद का आयात निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए किया है।
  - (vii) प्रस्तावित पाटनरोधी शुल्क संबंधित प्रदायकों द्वारा किए गए निर्यातों पर ही लागू होगा। आरती ने इस प्रदायक के लिए अपवर्जन की मांग नहीं की है। आरती द्वारा किया गया कोई भी आयात, यदि वह अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत नहीं है तो, वह भी पाटनरोधी शुल्क के अध्यधीन होगा।
  - (viii) आरती का उत्पादन लगातार भारी मात्रा में बना हुआ है। आरती द्वारा विचाराधीन उत्पाद की बिक्री इस उत्पादन से ही की जाती रही है।

(ix) देश में इस उत्पाद के उत्पादन और उसकी खपत पर विचार हुए आरती द्वारा किया गया आयात बहुत कम है जैसाकि अधोलिखित तालिका से देखा जा सकता है।

विवरण	इकाई	जांच की अवधि (पीओआई – अक्तूबर, 2011 – दिसम्बर, 2012)
आरती ड्रग्स द्वारा आयात	एमटी	***
भारत में कुल आयात	एमटी	63.35
आरती ड्रग्स का उत्पादन	एमटी	***
भारत में खपत (ग्राही सहित)	एमटी	1860
निम्नलिखित के संबंध में आरती ड्रग्स द्वारा आयात		
<ul><li>भारत में आयात</li></ul>	%	15.80
<ul><li>आरती ड्रग्स का उत्पादन</li></ul>	%	***
<ul><li>भारत में खपत</li></ul>	%	0.54

14. तथापि, इस कंपनी का भारत के बाहर इस उत्पाद के किसी निर्यातक – उत्पादक अथवा भारत में किसी आयातक से कोई संबंध नहीं हैं। इसलिए, नियम 2(ख) के अंतर्गत संभावित अपात्रता का प्रश्न ही नहीं उठता है।

## घ.2 प्राधिकारी द्वारा जांच

15. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के तहत निम्नवत परिभाषित किया गया है :-

''घरेलू उद्योग" का आशय समान वस्तु के विनिर्माण या उससे संबंधित किसी अन्य क्रियाकलाप में समग्र रूप से लगे उन सभी घरेलू उत्पादकों अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के समस्त घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात बनता हो, सिवाय इसके कि यदि वे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हो पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हो अथवा उसके स्वयं आयातक हो तो ऐसे मामलों में वाक्यांश "घरेलू उद्योग" को केवल शेष उत्पादकों के रूप में माना जाएगा।

- 16. यह आवेदनपत्र मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड और मैसर्स अमोली आर्गेनिक्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा घरेलू उद्योग की ओर से दायर किया गया है। इस उत्पाद के कैरव कैमिकल्स लिमिटेड, मेडिटेक कैमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड और सारा एक्सपोर्टस लिमिटेड नामक तीन अन्य उत्पादक भी है जिनमें से अंतिम दो ग्लाबस फार्मा केम के भाग है। मेडिटेक और सारा एक्सपोर्टस ने इस याचिका का समर्थन किया है वहीं कैरव कैमिकल्स ने न तो इस याचिका का समर्थन किया है किया है और न ही उसका विरोध किया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन आवेदकों का भारत के संबद्ध वस्तु के उत्पादन में भारी हिस्सा है और इसलिए वे नियमावली के आशय से अंतर्गत घरेलू उद्योग हैं।
- 17. यह नोट किया जाता है कि आरती ड्रग्स लिमिटेड ने संबद्ध वस्तु का अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत सीधे ही नियमित रूप से आयात किया है और उसने अपनी सहबद्ध कंपनी, सुयश लैबोरेटरीज के जिए भी निर्यात के प्रयोजनार्थ अनुप्रवाही उत्पादों का विनिर्माण करने के लिए आयात किया है। यह नोट किया जाता है कि आरती ड्रग्स लिमिटेड का फोकस संबद्ध वस्तु का आयात करने के लिए नहीं है। यह आयात अग्रिम लाइसेंस के अंतर्गत अनुप्रवाही उत्पादों का उत्पादन निर्यात बिक्रियों को करने के लिए किए गए है। इन आयातों का उद्देश्य अनुप्रवाही उत्पादों की निर्यात बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहना है। आरती ड्रग्स लिमिटेड द्वारा किए गए आयात देश में कुल उत्पादन और खपत का एक अमहत्वपूर्ण भाग है। आरती ड्रग्स लिमिटेड अभिभावी रूप से संबद्ध वस्तु का उत्पादक है और आरती ड्रग्स लिमिटेड द्वारा की गई बिक्रियां अपने निजी उत्पादन से की गई है।
- 18. जांच की अविध के दौरान आरती ड्रग्स लिमिटेड द्वारा किए गए आयातों से प्राधिकारी नोट करते हैं कि (क) यह आयात इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जिनसे कि घरेल उद्योग को स्वयं क्षति पहंचाती हो और (ख) आरती ड्रग्स लिमिटेड

- द्वारा किए गए आयातों को अग्निम लाइसेंस स्कीम के अंतर्गत क्लीयरेंस प्राप्त है। इसको देखते हुए और इस संबंध में प्राधिकारी द्वारा विगत के मामलों में ली गई तर्कयुक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी आरती ड्रग्स लिमिटेड को घरेलू उद्योग के दायरे से अपवर्जित कर देना उपयुक्त नहीं मानते हैं।
- 19. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि इस जांच की शुरूआत की तारीख को अभिभावी नियम 2(ख) प्राधिकारी को उन हालातों में अपने विवेक का प्रयोग करने का अधिकार प्रदान करता है जहां घरेलू उत्पादक या तो संबद्ध वस्तु आयात है अथवा उसका संबद्ध देश में संबद्ध वस्तु के किसी निर्यातक या आयातक से कोई संबंध हो। इसे माननीय चेन्नई उच्च न्यायालय द्वारा निरमा लिमिटेड बनाम सेंट गोबैन ग्लास इंडिया लिमिटेड के मामले में समर्थित किया है जिसमें उच्च न्यायालय ने, अन्य बातों के साथ-साथ यह धारित किया कि :
  - (i) वाक्यांश "घरेलू उद्योग", दिनांक 27.02.2010 को यथासंशोधित ने निर्दिष्ट प्राधिकारी की विवेकाधीन शक्तियों को समाप्त नहीं कर दिया है और निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह अधिकार है कि वह इस संबंध में अगली कार्रवाई करे:
- 20. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह धारित करते हैं कि मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड एक पात्र घरेलू उद्योग है। याचिकाकर्ता अर्थात मैसर्स आरती ड्रग्स लिमिटेड और मैसर्स अमोली आर्गेनिक्स प्राइवेट लिमिटेड का उत्पादन देश में संबद्ध वस्तु के कुल उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है। इसलिए, याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग है और उनका नियमावली के आशय के अंतर्गत यह याचिका दायर करने का अधिकार बनता है।

### ड. पाटन का आकलन - क्रियापद्धति एवं पैरामीटर्स

## ड.1 घरेलू उद्योग के विचार

- 21. घरेलू उद्योग ने, संक्षेप में, निम्नलिखित दावा किया है:
  - (i) इस विचाराधीन उत्पाद का केवल भारत और चीन के उत्पादन किया जा रहा है। भारतीय उत्पादक अपने उत्पाद की बिक्री न केवल घरेलू बाजार में करते हैं बल्कि वे इसकी बिक्री संपूर्ण विश्व में कई अन्य देशों में भी करते हैं। इन अधिकांश देशों में घरेलू उद्योग को चीन के कुछ आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है जो इस उत्पाद का इन तीसरे देशों में भी पाटन कर रहे है। चूंकि विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन केवल भारत और चीन में ही किया जा रहा है इसलिए, व्यापक जनहित में यह आवश्यक है कि इस उत्पाद का भारत में उत्पादन जारी रहे जो केवल तभी संभव है जब उसके अर्थक्षम बने रहे और घरेलू उद्योग की देश में इस उत्पाद की पाटन से रक्षा की जाती रहे।
  - (ii) डायक्लोफेनक सोडियम का लगभग एक दशक से अधिक समय से देश में निरंतर पाटन होता आ रहा है।
  - (iii) पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने के पश्चात आयातों की मात्रा में कमी आई। तथापि, इस उत्पाद के अब भी भारी मात्रा में आयात किए जा रहे हैं। यद्यपि डायक्लोफेनक सोडियम के आयातों में कमी आई है तथापि, इस उत्पाद के एक मध्यवर्ती उत्पाद (इंडोलिनोन) का देश में आगमन आरंभ हो गया। वस्तुत:, इंडोलिनोन के आयात की मात्रा में वृद्धि हो रही है।
  - (iv) इंडोलिनोन डायक्लोफेनक सोडियम का उत्पादन करने के लिए एक मध्यवर्ती उत्पाद है। इंडोलिनोन को डायक्लोफेनक सोडियम में परिवर्तित करने के लिए अपेक्षित मूल्य संवर्धन बहुत ही कम है। इस प्रकार, चीन के निर्यातकों ने भारत को इंडोलिनोन का निर्यात करके डायक्लोफेनक सोडियम पर लगने वाले पाटनरोधी शुल्क से छूट पाने का तरीका निकाल लिया है।
  - (v) चीन के विश्व व्यापी निर्यात यह दर्शाते हैं कि तीसरे देशों को चीन के भारी मात्रा में नियार्त हो रहे हैं। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लेने से उनके निर्यात भारत की ओर मुड़ जाएंगे।

- (vi) चीन के उत्पादकों के पास इस विचाराधीन उत्पाद की भारी मात्रा में आपूर्ति करने की क्षमता है जब कि भारतीय मांग तो बहुत ही कम अर्थात केवल 1300 एमटी है।
- (vii) चीन के किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी के निर्धारित प्रश्नावली में प्रत्युत्तर नहीं दिया है।
- (viii) वर्तमान मामले में, चीन के किसी भी उत्पादक ने एमईटी का दावा नहीं किया है और इसलिए चीन के उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देने का मामला किसी भी हाल में नहीं बनता है। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर निर्धारित किया जाना अपेक्षित है।
- (ix) याचिकाकर्ता ने चीन में सामान्य मूल्य का निर्धारण भारत में उत्पादन लागत का विधिवत समायोजन करके किया है। प्रमुख कच्चे माल और विद्युत के लिए याचिकाकर्ता कंपनियों में से एक कंपनी के खपत मानदंडों पर विचार किया गया है।
- (x) निर्यात कीमत याचिकाकर्ताओं ने भारत में संबद्ध आयातों की मात्रा एवं मूल्य का आकलन करने के लिए आईबीआईएस आंकड़ों पर भरोसा किया है। इस जांच की शुरूआत के पश्चात, याचिकाकर्ता ने आयातों के संबंध में जानकारी डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त की। इस सूचना का विश्लेषण यह दर्शाता है कि आईबीआईएस तथा डीजीसीआईएंडएस में रिपोर्ट की गई आयातों की कीमत एवं मात्रा से संबंधित आंकड़े पूर्णतया तुलनीय हैं। इसलिए, निर्दिष्ट प्राधिकारी से निर्यात कीमत का निर्धारण डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर करने का अनुरोध किया जाता है। इस निर्यात कीमत का समायोजन समुद्री भाड़ा, सामुद्रिक बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय, अंतरदेशीय भाड़ा, बैंक कमीशन और वैट अंतर, जिनको निर्यातक द्वारा भारत में निर्यात की जा रही सामग्री पर किए गए व्यय जैसे व्ययों के साथ किया गया है।
- (xi) चीन के उत्पादक एवं निर्यातक भारतीय बाजार में डीएफएस को पाटित करते रहे।
- (xii) यदि मौजूदा पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है तो विचाराधीन उत्पाद का पाटन और अधिक बढ़ने की संभावना है।

## ड.2 विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

22. किसी भी विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने न तो कोई प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया है, न ही कोई विधिक प्रस्तुतिकरण किया है या न ही उन्होंने जांच की अविध के दौरान कोई आवश्यक सूचना ही प्रदान कराई है। तथापि, इस विचाराधीन उत्पाद के कुछ प्रयोक्ताओं अर्थात शीतल कैमिकल इंडस्ट्री, खम्भाव; सुप्रा इंटरकेम, वड़ोदरा; डीडी कैमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड; फार्मसन कैमिकल्स अहमदाबाद; सुप्रा कम्बाइन्स वड़ोदरा; एस एन कैमिकल्स भीलवाड़ा; यहवी कैमिकल्स, वलसाइ; बेस मेटल, वड़ोदरा; मैरीडियन कैमिबान प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई; इतस फार्मास्युटिकल्स, कैमिकल्स अकलेश्वर, और इंडियन ड्रग्स मैन्यूफैक्चरर्स एसासिएशन, मुंबई; ने अनुरोध किया कि आयातों की कीमत कम होने और डीएफएस का विनिर्माण करने में प्रयोग की जाने वाली इंडोलिनोन की कीमतें बहुत कम होने को ध्यान में रखते हुए डीएफएस पर शुल्क निरंतर बनाई रखी जानी चाहिए।

## ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

#### सामान्य मूल्य

23. प्राधिकारी ने संबद्ध देश में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नाविलयां यह सलाह देते हुए प्रेषित कीं कि वे विहित स्वरूप एवं ढंग से प्रत्युत्तर दे। इस प्रश्नाविली का कोई उत्तर नहीं दिया गया और न ही चीन जन.गण. के उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा कोई प्रस्तुतिकराण् किया है।

- 24. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विगत तीन वर्षों में भारत तथा डब्ल्यूटीओ के अन्य सदस्य देशों द्वारा पाटनरोधी जांच में गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश, पाटनरोधी नियमावली में उल्लिखित शर्तों के अनुसार निर्यातक देश अथवा व्यक्तिगत निर्यातक/उत्पादक द्वारा इस अवधारणा का खंडन किए जाने के अध्यधीन माना गया है।
- 25. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैराग्राफ-8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की अवधारणा का खंडन किया जा सकता है यदि चीन जन गण. के निर्यातक (निर्यातकों)/ आयातक (आयातकों) पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में निर्धारित प्रक्रिया के आधार पर पर्याप्त साक्ष्य एवं सूचना प्रदान करे तथा इसके विपरीत तथ्य सिद्ध करें। चीन जनवादी गणराज्य से संबद्ध वस्तु के सहयोगकर्ता निर्यातकों/उत्पादकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा प्रश्नावली के प्रत्युत्तर में पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें जिससे कि प्राधिकारी निम्नलिखित मानदंडों पर विचार करने में सक्षम हो सके कि क्या:
  - > इन फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति उन भारी विकृतियों खासकर परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास, बट्टे खाते में डाले गए अन्य व्ययों, विनिमय व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के जरिए भुगतान के संबंध में की गई विकृतियों के अध्यधीन है जो पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली द्वारा कारित की गई है।
  - ऐसी फर्में दिवालियापन और संपत्ति विधियों के अध्यधीन होती है जो विधिक निश्चतता और इन फर्मों का प्रचालन करने के लिए स्थायित्व की गारंटी देती है; और
  - > विनिमय दर संपरिवर्तन बाजार दरों पर किए जाते हैं।
- 26. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने प्राधिकारी द्वारा जारी जांच शुरूआत नोटिस का प्रत्युत्तर न तो निर्यातक प्रश्नावली में दिया है और न ही बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली में दिया है। चूंकि चीन की किसी भी कंपनी ने बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे की मांग नहीं की है इसलिए प्राधिकारी ने यह निर्धारित नहीं किया है कि क्या चीन के किसी उत्पादक को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिया जा सकता है।
- 27. चूंकि चीन के किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया है इसलिए प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उल्लिखित के अनुसार कार्रवाई की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि तीसरे देश की लागत और कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए घरेलू बिक्रियों के संपूर्ण एवं विस्तृत आंकड़े या तृतीय देशों की निर्यात बिक्रियों तथा तृतीय देश में इन उत्पादकों की उत्पादन लागत और उनका सहयोग अपेक्षित होता है। इन बाजारों में प्रचलित कीमत और लागत के संबंध में कोई सूचना न तो आवेदन द्वारा प्रदान कराई गई है और न ही निर्यातकों द्वारा या अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रदान कराई गई है, न ही सार्वजिनक रूप से कोई सूचना प्राप्त है, न ही चीन की कपंनियों ने प्रत्युत्तर दिया है और न ही उन्होंने तृतीय देश समुचित बाजार अर्थव्यवस्था के संबंध में कोई दावा किया है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में यथाउल्लिखित किसी अन्य तरीके के संबंध में रिकार्ड में पर्याप्त सूचना प्राप्त न होने पर प्राधिकारी ने जांच की अविध तथा यह जांच निर्णायक समीक्षा होने के कारण, जांच की अविध के पश्चात की अविध के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण "अन्य तर्कसंगत आधार" के तरीके द्वारा किया है।
- 28. इसलिए, प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य का निर्माण भारत में उत्पादन लागत बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्यय एवं लाभ सहित का समायोजन करके और प्रमुख कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों पर विचार करते हुए किया। तदनुसार, जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में चीन के निर्यातकों के लिए निर्मित सामान्य मूल्य का निर्धारण निम्नलिखित पाटन मार्जिन तालिका के अनुसार किया।

#### निर्यात कीमत

29. चूंकि किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने ऐसी कोई सूचना प्रदान नहीं कराई है जिसका प्रयोग निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए किया जा सके, इसलिए प्राधिकारी ने, चीन जन गण. के सभी निर्यातकों के लिए "निर्यात कीमत" का निर्धारण भारत में किए गए आयात के आधार पर किया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस से प्राप्त संव्यवहारवार आयात आंकड़ों को लिया है। चीन के उत्पादकों द्वारा किए गए असहयोग के कारण उपलब्ध तथ्यों के आधार पर कीमत समायोजन करने की अनुमित दी गई है। तदनुसार, निर्यात कीमत का समायोजन समुद्री भाड़ा, सामुद्रिक बीमा, कमीशन, पत्तन व्यय, बैंक प्रभार, अंतरदेशीय भाड़ा, वैट अंतर आदि के लिए किया गया है। जांच की अवधि के लिए और यह समीक्षा निर्णायक समीक्षा होने के कारण जांच की अवधि के पश्चात की अवधि के लिए प्राधिकारी द्वारा निवल निर्यात कीमत अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दी गई है।

#### पाटन मार्जिन

30. इस तरह फैक्टरी बाह्य स्तर पर निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत; चीन जन गण. के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच की अवधि और यह समीक्षा निर्णायक समीक्षा होने के कारण जांच की अवधि के पश्चात की अवधि के लिए पाटन मार्जिन, अधोलिखित पाटन मार्जिन तालिका में दिया गया है:

	$\sim$	$\sim$
पाटन	माजन	तालका

विवरण	यूनिट	जांच की अवधि (पीओआई)	जांच की अवधि के पश्चात की
		अक्तूबर, 2011 से दिसम्बर,	अवधि (जनवरी 2013-
		2012	दिसम्बर, 2013)
विनिमय दर	रुपए	53.04	58.95
	यूएसडी/ किलोग्राम		
सामान्य मूल्य		***	***
निर्यात कीमत	यूएसडी/ किलोग्राम	***	***
पाटन मार्जिन	यूएसडी/ किलोग्राम	***	***
पाटन मार्जिन - %	%	***	***
पाटन मार्जिन रेंज %	%	0-10	15-30

### च. क्षति का आकलन एवं कारणात्मक संबंध की जांच

## घरेलू उद्योग को क्षति

### च.1 घरेलू उद्योग के विचार

- 31. घरेलू उद्योग ने प्रस्तृतिकरण किया है कि :
  - (i) याचिकाकर्ता नियमावली के आशय के अंतर्गत घरेलू उद्योग है।
  - (ii) याचिकाकर्ताओं ने क्षति का दावा विचाराधीन उत्पाद से संबंधित अपनी सूचना के आधार पर किया है।
  - (iii) इस अवधि के दौरान इस उत्पाद की मांग में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। मांग में कुछ सीमा तक यह गिरावट इंडोलिनोन जिसे डीएफएस में संपरिवर्तित करके बाजार में बेचा गया, के आयातों के कारण आई है।

- (iv) क्षिति अविध के दौरान चीन से आयातों की मात्रा में गिरावट आई है, जिसके लिए प्रभावी वर्तमान पाटनरोधी शुल्क और मध्यवर्ती उत्पाद (इंडोलिनोन) के आयातों को उत्तरदायी ठहराया जाना चाहिए। वास्तव में इंडोलिनोन के आयात की मात्रा में वृद्धि हो रही है। यदि डायक्लोफेनक सोडियम पर वर्तमान पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है तो संबद्ध देश से डायक्लोफेनक सोडियम के आयातों की मात्रा में निश्चित ही वृद्धि होगी।
- (v) यद्यपि क्षति अवधि के दौरान चीन से पाटित आयातों के बाजार हिस्से में कमी आई है फिर भी पाटित कीमतों पर इन आयातों का होना जारी रहा है।
- (vi) पाटनरोधी शुल्क की गैर-मौजूदगी में कीमत अधोरदन और कीमत अधोविक्रयण बहुत अधिक सकारात्मक है।
- (vii) यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति तथा पाटन और अधिक बढ़ जाएगा। यह (i) भारी कीमत अधोरदन (ii) कीमत अधोविक्रयण (iii) चीन में भारी क्षमता से स्पष्ट हो जाता है।
- (viii) घरेलू उद्योग ने अपनी क्षमता में विस्तार किया है। यद्यपि घरेलू उद्योग अपने उत्पादन में कुछ सीमा तक सुधार करने में सक्षम था, परंतु घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- (ix) घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग एवं बाजार हिस्सा में 2011-12 तक वृद्धि होने के पश्चात इसमें लगातार गिरावट आई है।
- (x) यद्यपि घरलू उद्योग लाभ अर्जित करने में सक्षम था परंतु आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच की अविध के दौरान इसकी लाभप्रदता घटी है।
- (xi) चीन के उत्पादकों/निर्यातकों के पास उत्पादन की बेशी क्षमता है।
- (xii) चीन के कुछ आपूर्तिकर्ता का निर्यात उन्मुखीकरण यह सुझाव देता है कि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लेने से भारतीय बाजार में उक्त सामग्री का पाटन करने के द्वार खुल जाएंगे।
- (xiii) प्रभावी पाटनरोधी शुल्क चीन होने वाले आयात की मात्रा को नियंत्रित करने में प्रभावी रही है। यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है, और उसके परिणामस्वरूप संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा बढ़ जाती है तो घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती है।
- (xiv) पाटित कीमतों पर न बेचे गए आयातों की मात्रा एवं मूल्य खपत की प्रणाली में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और उत्पादकता ने घरेलू उद्योग को दावाकृत क्षति कारित नहीं की है।
- (xv) सकारात्मक कीमत अधोरदन और कीमत अधोविक्रयण, कीमत निग्रहण कारित करने वाले आयात; घरेलू उद्योग के निष्पादन में बिक्री मात्रा, बाजार हिस्सा, लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ और नकदी प्रवाह में गिरावट जैसे कारक यह स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों द्वारा ही कारित की जा रही है।
- (xvi) डायक्लोफेनक सोडियम पर पाटनरोधी शुल्क अगले पांच वर्षों तक के लिए बढ़ाना अपेक्षित है। इसके अतिरिक्त, प्रवंचना से वचन के लिए इंडोलिनोन के आयातों पर भी पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना आवश्यक है।
- (xvii) पाटनरोधी शुल्क की उसी प्रमात्रा और उसी रूप में लगाया जाना इस कारण से अपेक्षित है कि इस विचाराधीन उत्पाद का पाटन धीरे-धीरे शिफ्ट होकर इंडोलिनोन का पाटन होने लगा। इसके अतिरिक्त,

वह कीमत जिस पर इंडोलिनोन का भारत को आयात किया जाताहै, स्पष्टत: दर्शाता है कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क में और अधिक विस्तार नहीं किया जाता है और यदि पाटनरोधी शुल्क की वर्तमान प्रमात्रा को इंडोलिनोन के आयतों पर संवर्धित नहीं किया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है। शुल्क की प्रमात्रा में किसी भी प्रकार के संशोधन का आशय यह होगा कि घरेलू उद्योग को क्षति लगातार बनी रहेगी क्योंकि इंडोलिनोन के आयात घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाते रहेंगे।

# च. 2 विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों के विचार

32. किसी भी विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने न तो कोई प्रश्नावली प्रत्युत्तर दायर किया है, न कोई विधिक प्रस्तुतिकरण किया है न ही वर्तमान जांच के दौरान कोई जरूरी सूचना प्रदान कराई है।

## च. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

- 34. पाटित आयातों का भारत में घरेलू उद्योग पर प्रभाव की जांच करने के लिए उन सभी संकेतकों, जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्रापण, पाटन मार्जिन की मात्रा पर प्रमुख नियमावली के अनुबंध-॥ के अनुसार विचार किया गया।
- 35. वर्तमान जांच प्रभावी पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जांच है। नियम 23 में प्रावधान है कि नियम 11 के प्रावधान यथावश्यक परिवर्तनों सिहत लागू होंगे। इसिलए, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को क्षिति का निर्धारण अनुबंध-॥ के साथ पठित नियम 11 के प्रावधानों, यथावश्यक परिवर्तनों सिहत पर विचार करते हुए किया है। इसके अतिरिक्त, चूंकि विचाराधीन उत्पाद पर पाटनरोधी शुल्क प्रभावी है इसिलए प्राधिकारी यह विचार करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षिति की जांच करते समय संबद्ध देश से आयातित उत्पाद पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के तथ्य की जांच करना आवश्यक है। प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या पाटन एवं क्षिति को दूर करने के लिए मौजूदा उपाय में विस्तार करना अपेक्षित है या नहीं।

#### मात्रा प्रभाव

- 36. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में, प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन और खपत के संगत रूप से भारी वृद्धि हुई है। इस संबंध में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नलिखित प्रावधान है:
  - "पाटित आयातों की जांच करते वक्त उक्त प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से या भारत में उत्पादन या खपत के संगत रूप में भारी वृद्धि हुई है।

## क) मांग एवं बाजार हिस्से का आकलन

37. इस विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग/खपत का परिकलन करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग तथा भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को भारत में कुल आयात से जोड़ दिया। इस प्रयोजनार्थ आयातों का निर्धाराण् डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त खेंपवार आयात आंकड़ों के आधार पर किया गया है। क्षति अवधि के दौरान इस उत्पाद की मांग निम्नवत थी :

# इडोलिनोन और ग्राही खपत दोनों का अपवर्जन करके मांग

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
					(वार्षिकीकृत)
आयात-चीन	एमटी	142	47	88	51
आयात – अन्य देश	एमटी	-	1	I	0.04
घरेलू उद्योग मर्चेंट बिक्री	एमटी	452	610	572	447
अन्य उत्पादकों की बिक्री	एमटी	430	370	366	376
कुल मांग	एमटी	1,024	1,027	1,026	874
मांग में बाजार हिस्सा	%				
आयात-चीन	%	13.88%	4.61%	8.59%	5.80%
आयात – अन्य देश	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.00%
घरेलू उद्योग मर्चेंट बिक्री	%	44.15%	59.37%	55.71%	51.16%
अन्य उत्पादकों की बिक्री	%	41.97%	36.02%	35.69%	43.04%

# इंडोलिनोन को छोड़कर तथा ग्राही खपत को शामिल करते हुए मांग

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
मांग चीन	एमटी	142	47	88	51
आयात अन्य देश	एमटी	-	-	-	0.04
घरेलू उद्योग की बिक्री	एमटी	452	610	572	447
ग्राही खपत	एमटी	72	195	397	348
अन्य उत्पादकों की बिक्री	एमटी	430	370	366	376
अन्य उत्पादकों की ग्राही खपत	एमटी	60	66	61	49
कुल मांग	एमटी	1,157	1,288	1,484	1,270
मांग में बाजार हिस्सा	%				
आयात - चीन	%	12%	4%	6%	4%
आयात - अन्य देश	%	0%	0%	0%	0%
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	39%	47%	39%	35%
ग्राही खपत	%	6%	15%	27%	27%
अन्य उत्पादकों की बिक्री		37%	29%	25%	30%
अन्य उत्पादकों की ग्राही खपत		5%	5%	4%	4%
कुल मांग		100%	100%	100%	100%

38. इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने प्रस्तुतिकरण किया है कि देश में अंतिम उत्पाद की मांग का आकलन करने के प्रयोजनार्थ डायक्लोफेनक सोडियम की आयात मात्रा के साथ इंडोलिनोन के आयात की मात्रा को जोड़ा जाना चाहिए। उस मामले में देश की मांग की स्थिति निम्नलिखित है :

# इंडोलिनोन और ग्राही खपत दोनों को शामिल करते हुए मांग

ग्राही सहित मांग	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
					(वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्री	एमटी	524	805	969	795
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	एमटी	490	436	427	425
आयात –संबद्ध देश डीएफएस	एमटी	142	47	88	51
आयात संबद्ध देश - इंडोलिनोन	एमटी	165	210	299	218
संबद्ध देश से आयात	एमटी				
5 डीएफएस + इंडोलिनोन		307	257	387	269
आयात-अन्य देश	एमटी	0	0	0	0.04
कुल मांग	एमटी	1,321	1,498	1,783	1,489
ग्राही सहित मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	40%	54%	54%	53%
अन्य भारतीय उत्पादक	%	37%	29%	24%	29%
संबद्ध देश	%	23%	17%	22%	18%
अन्य देश	%	0%	0%	0%	0.003%

# इंडोलिनोन को शामिल करते हुए तथा ग्राही खपत का अपवर्जन करते हुए मांग

ग्राही खपत को छोड़कर मांग	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्री	एमटी	452	610	572	447
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	एमटी	430	370	366	376
आयात संबद्ध देश - डीएसएफ	एमटी	142	47	88	51
आयात संबद्ध देश इंडोलिनोन	एमटी	165	210	299	218
आयात संबद्ध देश – डीएफएस + इंडोलिनोन	एमटी	307	257	387	269
आयात – अन्य देश	एमटी	0	0	0	0.04
कुल मांग	एमटी	1,189	1,237	1,325	1,092
ग्राही को छोड़कर मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	38%	49%	43%	41%
अन्य भारतीय उत्पादक	%	36%	30%	28%	35%
संबद्ध देश	%	26%	21%	29%	25%
अन्य देश	%	0%	0%	0%	0.004%

### 39. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- (i) विचाराधीन उत्पाद की मांग में आधार वर्ष के साथ-साथ विगत वर्ष की तुलना में जांच की अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।
- (ii) यद्यपि डायक्लोफेनल सोडियम की आयात मात्रा में गिरावट आई है, तथापि, इंडोलिनोन की आयात मात्रा में क्षति अविध में वृद्धि हुई है।
- (iii) संबद्ध देश की मांग बाजार हिस्से में क्षति अवधि के दौरान गिरावट आई है।
- (iv) घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अविध में वृद्धि हुई है। तथापि, पिछले वर्ष की तुलना में उसमें कमी आई है।

## ख. आयात मात्रा एवं बाजार हिस्सा

40. आयातों एवं बाजार हिस्से के संबंध में सूचना अधोलिखित तालिका में दी गई है:

### इंडोलिनोन को छोड़कर आयात

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
चीन – डीएफएस	एमटी	142	47	88	51
अन्य देश	एमटी	-	-	-	0.04
कुल आयात	एमटी	142	47	88	51
निम्नलिखित के संबंध में आयात					
कुल आयात	%	100%	100%	100%	100%
उत्पादन	%	16%	4%	7%	4%
<ul><li>खपत (ग्राही सहित)</li></ul>	%	11%	4%	5%	3.43%
<ul><li>खपत (ग्राही को छोड़कर)</li></ul>	%	12%	4%	7%	5%

41. इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग ने यह प्रस्तुत किया है कि डीएफएस की आयात मात्रा और उसके बाजार हिस्से के आकलन के प्रयोजनार्थ डायक्लोफेनक सोडियम की आयात मात्रा में इंडोलिनोन की आयात मात्रा को भी शामिल करना चाहिए।

## इंडोलिनोन सहित

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
चीन डीएफएस	एमटी	142	47	88	51
चीन – इंडोलिनोन	एमटी	165	210	299	218
अन्य देश	एमटी	-	-	-	0.04
कुल आयात	एमटी	307	257	387	269
निम्नलिखित के संबंध में आयात					
कुल आयात	%	100%	100%	100%	99.99%
उत्पादन	%	35%	22%	30%	20%

>	खपत (ग्राही सहित)	%	23%	17%	22%	18%
>	खपत (ग्राही को छोड़कर)	%	26%	21%	29%	25%

- 42. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :
  - (i) डीएफएस के आयातों की मात्रा में आधार वर्ष के साथ-साथ विगत वर्ष की तुलना में जांच की अविध में गिरावट आई है। तथापि, चीन से इंडोलिनोन सिहत आयात की मात्रा में वर्ष 2011-12 में वृद्धि हुई और फिर आधार वर्ष 2009-10 की तुलना में जांच की अविध में इसमें गिरावट आई। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि वर्तमान स्थिति इसलिए बनी क्योंकि पाटनरोधी शुल्क प्रभावी था। यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो पाटित आयातों की मात्रा में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।
  - (ii) कुल आयात में संबद्ध देश का बाजार हिस्सा बहुत अधिक है।
  - (iii) भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में भी संबद्ध देश से आयातों का बाजार हिस्सा बहुत अधिक है। यह नोट किया जाता है कि यह स्थिति इस तथ्य के बावजूद है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क उदग्रहित किया जाता है।
- 43. घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि यद्यपि डायक्लोफेनक सोडियम की आयात मात्रा में कमी आई है तथापि, पाटनरोधी शुल्क का निरोध करते हुए देश में मध्यवर्ती उत्पाद (इंडोलिनोन) ने आना प्रारंभ कर दिया है। वास्तव में, इस उत्पाद की आयात मात्रा मं वृद्धि हो रही है और यह मात्रा बहुत अधिक है। यदि डायक्लोफेनक सोडियम पर पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो संबद्ध देश से डायक्लोफेनक सोडियम के आयात की मात्रा में निश्चित रूप से वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त, यदि डायक्लोफेनक सोडियम पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखा जाता है तो इंडोलिनोन के आयात घरेलू उद्योग को क्षति कारित करते रहेंगे। चीन से पाटित आयातें की मात्रा में वृद्धि होने की भारी संभावना है। चीन के उत्पादकों की निर्यात क्षमता पर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है या पाटनरोधी शुल्क की निरंतरता केवल डायक्लोफेनक सोडियम के आयातों तक ही सीमित रखी जाती है तो आयातों में एकदम वृद्धि हो जाएगी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की प्रवंचना का मुद्दा वर्तमान मामले के दायरे से परे है।

### II. कीमत प्रभाव

44. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नलिखित उल्लेख है :

"नियमावली के नियम 18 के उपनियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन हुआ है या क्या इन आयातों का प्रभाव कीमतों का भारी मात्रा में अवमंदन करना है या कीमतों को बढ़ने से रोकना है जो अन्यथा भारी मात्रा में घटित हुआ होता"।

### क) कीमत अधोरदन एवं कीमत अधोविक्रयण

45. यह जांच की गई कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत अधोरदन हुआ है या क्या शुल्क की समाप्ति की स्थिति में विपरीत कीमत प्रभाव की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। चूंकि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है, इसलिए प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि यदि वर्तमान शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो इस कीमत अधोरदन की सीमा क्या होगी। इस संदर्भ में, प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण, गैर क्षतिकारी बिक्री कीमत और जांच की अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों की उतराई कीमत का विश्लेषण किया है।

46. घरेलू उद्योग की कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच कीमत अधोरदन और कीमत अधोविक्रयण के संदर्भ में की गई है। इस उद्देश्य के लिए, घरेलू उद्योग के निवल ब्रिती प्रापण (एनएसआर) और गैर क्षितिकारी कीमत की तुलना संबद्ध देश से आयातों के उतराई मूल्य से की गई है। निवल बिक्री प्रापण का निर्धारण उत्पाद कर, रिबेट, डिस्काउंट और करों का अपवर्जन करने के पश्चात किया गया। आयातों के उतराई मूल्य का परिकलन 1 प्रतिशत उतराई प्रभार, लागू आधारभूत सीमा शुल्क और संबद्ध आयातों के सीआईएफ मूल्य पर उपकर जोड़कर किया गया है। आयातों के उतराई मूल्य की तुलना इस तरह निर्धारित घरेलू उद्योग के निवल बिक्री प्रापण से की गई है। अधोरदन एवं अधोविक्रयण की प्रवृत्ति अधोलिखित है:

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
	रुपए/		***	***	***
आयातों की उतराई कीमत	एमटी	***			
घरेलू उद्योग का निवल बिक्री	रुपए/	***	***	***	***
प्रापण	एमटी				
	रुपए/	***	***	***	***
कीमत अधोरदन	एमटी				
कीमत अधोरदन प्रतिशत	%	***	***	***	***
कीमत अधोरदन रेंज	%	25-60	12-30	12-30	0-12
	रुपए/				***
गैर क्षतिकारी कीमत	एमटी				
	रुपए/				***
कीमत अधोरदन विक्रयण	एमटी				
कीमत अधोरदन विक्रयण	%				***
कीमत अधोरदन विक्रयण रेंज	%				(0-10)

## 47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- क. आयातों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है, अत: इसके परिणामस्वरूप बाजार में कीमत अधोरदन हुआ। इसके अतिरिक्त, कीमत अधोरदन का स्तर बहुत अधिक है।
- ख. आयातों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत से अधिकथा। अत:, आयातों के परिणामस्वरूप बाजार में कीमत अधोविक्रयण नहीं हुआ।

## ख) कीमत निग्रहण/अवमंदन

- 48. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमतों की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत प्रभाव हुआ या पाटनरोधी शल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में भारी विपरीत कीमत प्रभाव पड़ने की संभावना है।
- 49. कीमत निग्रहण एवं कीमत अवमंदन प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी को जांच की अवधि और क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की प्रति यूनिट बिक्री लागत और बिक्री कीमत की जांच करनी होती है। इस संबंध में प्रवृत्तियां अधोलिखित तालिका में दी गई हैं :

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
बिक्री लागत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	114	130	133
बिक्री कीमत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	97	123	126

50. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में संपूर्ण क्षिति अविध के दौरान निरंतर वृद्धि हुई है। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि बिक्री कीमत ने भी वर्ष 2010-11 को छोड़कर समान प्रवृत्ति अपनाई है। तथापि, बिक्री कीमत में होने वाली वृद्धि आधार वर्ष की तुलना में कम हुई है। जबिक उत्पादन लागत में 33 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है, वही बिक्री कीमत में केवल 26 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अत: पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर देने से घरेलू बाजार में भारी विपरीत कीमत निग्रहण प्रभाव होगा।

## घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले आर्थिक पैरामीटर

51. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार क्षति के निर्धारण में संबद्ध वस्तु के घरेलू उत्पादकों पर संबद्ध वस्तु के आयातों के परिणामी प्रभाव की उद्देश्यपरक जांच अंतर्ग्रस्त होगी। उक्त नियमावली के संगत उद्धरण निम्नलिखित रूप में उदधृत किया जा रहा है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतांकों का मूल्यांकन करना शामिल होगा जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता हो, जिनमें शामिल हैं बिक्री, लाभ, आउटपुट, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश पर प्रतिलाभ या क्षमता उपयोग में प्राकृतिक एवं संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकदी प्रवाह, मालसूची, रोजगार, पारिश्रमिक, विकास, पूंजी निवेश उगाहने की क्षमता पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल है।

## क) बिक्री, क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग

52. घरेलू उत्पादन की मात्रा और घरेलू उद्योग के घरेलू प्रचालनों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच घरेलू उद्योग कुल उत्पादन, क्षमता उपयोग ओर घरेलू बिक्री के रूप में की गई। घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री मात्रा निम्नलिखित है:

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
संस्थापित क्षमता	एमटी	1,060	1,340	1,520	1,640
उत्पादन	एमटी	872	1,194	1,269	1,354
क्षमता उपयोग	%	82%	89%	84%	83%
घरेलू बिक्री	एमटी	452	610	572	447
ग्राही बिक्री	एमटी	73	194	396	347
निर्यात बिक्री	एमटी	365	468	392	568
कुल बिक्री	एमटी	890	1,272	1,360	1,362

- 53. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :
  - क. घरेलू उद्योग ने संपूर्ण क्षति अवधि में अपनी क्षमता में वृद्धि की है।
  - ख. घरेलू उद्योग के उत्पादन में क्षति अवधि में वृद्धि हुई है।

- ग. घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2010-11 तक वृद्धि हुई और फिर जांच की अवधि तक इसमें गिरावट आई।
- घ. घरेलू बिक्री में 2010-11 तक वृद्धि हुई और फिर जांच की अवधि तक इसमें गिरावट आई।
- ड. घरेलू उद्योग विचाराधीन उत्पाद के लिए अपनी क्षमता में वृद्धि करने और पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने के पश्चात इसकी उत्पादन और बिक्री में वृद्धि करने में सक्षम हुआ है।

# ख) बाजार हिस्सा

54. घरेलू उद्योग तथा अन्य पक्षकारों का बाजार हिस्सा निम्नलिखित है:

# (क) इंडोलिनोन आयातों को छोड़कर तथा ग्राही खपत को छोड़कर

विवरण	मापन की गई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
मांग में बाजार हिस्सा	%				
आयात एसएसआर चीन	%	13.88%	4.61%	8.59%	5.80%
अन्य देश	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.005%
घरेलू उद्योग	%	44.15%	59.37%	55.71%	51.16%
अन्य उत्पादक	%	41.97%	36.02%	35.69%	43.04%

# (ख) इंडोलिनोन आयातों को छोड़कर और ग्राही खपत को शामिल करते हुए

विवरण	मापन की गई	<b>2009</b> -10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
मांग में बाजार हिस्सा	%				
आयात एसएसआर चीन	%	12%	4%	6%	4%
अन्य देश	%	0%	0%	0%	0.003%
घरेलू उद्योग बिक्री	%	39%	47%	39%	35%
ग्राही खपत	%	6%	15%	27%	27%
अन्य उत्पादक		37%	29%	25%	30%
अन्य उत्पादकों की ग्राही खपत		5%	5%	4%	4%
कुल मांग		100%	100%	100%	100%

# (ग) इंडोलिनोन आयातों सहित और ग्राही खपत सहित

ग्राही खपत सहित मांग में बाजार हिस्सा	मापन की गई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
घरेलू उद्योग	%	40%	54%	54%	53%
अन्य भारतीय उत्पादक	%	37%	29%	24%	29%
संबद्ध देश	%	23%	17%	22%	18%
अन्य देश	%	0%	0%	0%	0.003%

# (घ) इंडोलिनोन आयातों सहित और ग्राही खपत को छोड़कर

ग्राही खपत को छोड़कर मांग में बाजार हिस्सा	मापन की गई	<b>2009</b> -10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
घरेलू उद्योग	%	38%	49%	43%	41%
अन्य भारती उत्पादक	%	36%	30%	28%	34%
संबद्ध देश	%	26%	21%	29%	25%
अन्य देश	%	0%	-	-	0.004%

55. उपर्युक्त तालिका से यह नोट किया जाता है कि क्षति अविध के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में सुधार हुआ वहीं चीन के पाटित आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि पाटनरोधी शुल्क बाजार में उनके हिस्से में सुधार करने में उन्हें सहायता देने में सक्षम रही है परंतु पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में उसके परिणामस्वरूप उत्पाद की वर्तमान आयात कीमत तथा जांच की अविध में इंडोलिनोन की आयात कीमत को ध्यान में रखते हुए, घरेलू उद्योग की बाजार कीमत में गिरावट आएगी।

#### (ग) लाभप्रदायकता

56. घरेलू उद्योग की बिक्री लागत, बिक्री कीमत और लाभ एवं हानि को निम्नवत दर्शाया गया है:

विवरण	मापन की इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री लागत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	114	130	133
बिक्री कीमत	रुपए/एमटी	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	97	123	126
लाभ/हानि	रुपए/एमटी	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	9	86	86

- 57. यह नोट किया जाता है कि :
  - क. क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागत में वृद्धि हुई।
  - ख. उसी अविध में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में भी वृद्धि हुई। तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि, लागत में वृद्धि की तुलना में बहुत कम थी।
  - ग. यद्यपि, बिक्री कीमत तथा बिक्री लागत दोनों में ही वृद्धि हुई परंतु लागत में यह वृद्धि (33 प्रतिशत) बिक्री कीमत में वृद्धि (26 प्रतिशत) की तुलना में बहुत अधिक थी।

### घ) नकद लाभ एवं निवेश पर प्रतिलाभ

58. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से अर्जित नकद लाभ और निवेश पर प्रतिलाभ निम्नलिखित है :

विवरण	मापन की इकाई	2009-	2010-	2011-	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
		10	11	12	
लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	12	109	85

लाभ/हानि	लाख रुपए	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	29	116	94
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	24	109	90
लगाई गई पूंजी पर प्रतिलाभ एनएफए	%	***	***	***	***
अनुक्रमित		100	18	62	48

### 59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि :

- (i) लाभ, नकद लाभ और निवेश पर प्रतिलाभ में वर्ष 2010-11 में गिरावट आई। लाभ में वर्ष 2011-12 में वृद्धि हुई और फिर जांच की अवधि में इसमें गिरावट आई। जांच की अवधि के दौरान लाभ विगत वर्ष के साथ-साथ आधार वर्ष की तुलना में कम है।
- (ii) निवेश पर प्रतिलाभ और नकद लाभ ने भी लाभ की प्रवृत्ति का ही अनुकरण किया।

## ड. मालसूची

60. घरेलू उद्योग की मालसूची की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दी गई है:

मालसूची (एमटी में)	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
औसत स्टॉक	***	***	***	***

61. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में क्षति अविध में वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि वे मालसूची का उच्च स्टॉक बनाए रखने को सहन नहीं कर सकते और उन्हें घरेलू या निर्यात बाजार में उस उत्पाद की बिक्री किसी भी कीमत पर करनी पड़ती है। इसके बावजूद, मालसूची के स्तर में क्षति अविध के दौरान वृद्धि हुई।

### (च) रोजगार, पारिश्रमिक, उत्पादकता

62. घरेलू उद्योग द्वारा नियोजन में लगाए गए कर्मचारियों की संख्या, उसकी उत्पादकता और संदत्त पारिश्रमिक निम्नलिखित है :

विवरण	इकाई	2009-10	2010-11	2011-12	जांच की अवधि
रोजगार	संख्या	***	***	***	***
पारिश्रमिक	लाख रुपए	***	***	***	***
पति कर्मचारी उत्पादकता	ਹਸਟੀ	***	***	***	***

63. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग में रोजगार लगभग समान स्तर पर बना रहा, जबिक विगत वर्ष के साथ-साथ आधार वर्ष की तुलना में पारिश्रमिक में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की प्रति कर्मचारी उत्पादकता में क्षित अविध के दौरान सुधार हुआ है।

## छ. घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

64. संबद्ध देश से आयात कीमत, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य कारक जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं; उन पर विचार करने से यह प्रदर्शित होगा कि संबद्ध देश से आयातित माल का उतराई मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से बहुत कम जिसके कारण भारतीय बाजार में कीमत अधोरदन हो रहा है। घरेलू उद्योग ने प्रस्तुतिकरण किया है कि भारतीय उत्पादकों की कीमत के लिए बेंचमार्क चीन से आयात कीमतें होती हैं। इस उत्पाद का कोई अर्थक्षम प्रतिस्थानी नहीं है। इस उत्पाद के लिए मांग में भारी उछाल प्रदर्शित हुआ है और वह घरेलू उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे कीमत निग्रहण का एक उत्तरदायी कारक नहीं हो सकता है। अत:, यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग की कीमतों के लिए एकमात्र उत्तरदायी कारक चीन से उत्पादों की आयात कीमत तथा घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत है।

#### ज. पाटन मार्जि की मात्रा

65. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध देश से पाटन मार्जिन जांच की अवधि और जांच की अवधि के पश्चात की अवधि दोनों में सकारात्मक है।

## झ. नवीन निवेश उगाहने की क्षमता

66. घरेलू उद्योग एक बहु उत्पाद कंपनी है। इसलिए, संबद्ध वस्तु के पाटन ने घरेलू उद्योग द्वारा पूंजी उगाहने की क्षमता को प्रभावित नहीं किया है।

### ञ. वृद्धि

67. विगत वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग का कुछ महत्वपूर्ण पैरामीटरों के संबंध में विकास निम्नलिखित प्रवृत्तियां प्रदर्शित करता है।

वृद्धि	मापन की इकाई	2009-10	20 <b>10</b> -11	2011-12	जांच की अवधि
उत्पाद	%	-	37%	6%	7%
घरेलू उद्योग की मात्रा	%	-	35%	-6%	-22%
क्षमता उपयोग	%	-	6.91%	-5.61%	-0.98%
घरेलू बिक्री कीमत	%	-	-3%	27%	2%
कर पूर्व लाभ	%	-	-88%	776%	-22%
नकद लाभ	%	-	-71%	301%	-19%
लगाई गई पूंजी पर प्रतिलाभ (एनएफए आधार पर)	%	-	-9.59%	7.16%	-1.70%
बाजार हिस्सा	%	-	14.05%	0.61%	-0.97%

68. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि अधिकांश पैरामीटरों जैसे बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर प्रतिलाभ, नकद लाभ, बाजार हिस्सा आदि में ऋणात्मक प्रवृत्तियां पाई गईं। यह सभी पैरामीटर जांच अवधि में विगत वर्ष 2011- 12 की तुलना में ऋणात्मक वृद्धि प्रदर्शित करते हैं। यह स्थिति तो पाटनरोधी शुल्क प्रभावी होने के बावजूद बनी है।

#### ट. क्षति के संबंध में निष्कर्ष

- 69. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :
  - क) इस विचाराधीन उत्पाद का चीन से लगातार पाटन हो रहा है। यद्यपि जांच की अवधि में डायक्लोफेनक सोडियम के आयात की मात्रा में गिरावट आई है वही एक मध्यवर्ती उत्पाद इंडोलिनोन के आयात में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

- ख) यद्यपि जांच की अवधि में डायक्लोफेनक सोडियम के आयात की मात्रा में गिरावट आई है वही एक मध्यवर्ती उत्पाद इंडोलिनोन के आयात में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ग) यद्यपि घरेलू कुछ हद तक अपने उत्पादन में सुधार करने में सक्षम था परंतु यह वृद्धि इसकी क्षमता में वृद्धि के अनुपात में नहीं था।
- घ) घरेलू उद्योग को कीमत निग्रहण सहन करना पड़ रहा है।
- ङ) यद्यपि उत्पादन लागत और बिक्री कीमत दोनों में वृद्धि हुई, तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि उसकी उत्पादन लागत में हुई वृद्धि की तुलना में कम थी।
- च) आयातों की उतराई कीमत जांच की अवधि में घरेलू उद्योग की गैर-क्षितकारी की गैर-क्षितकारी कीमत से अधिक थी और इसलिए आयातों के परिणामस्वरूप बाजार में कीमत अधोविक्रयण नहीं हो रहा था। कीमत अधोविक्रयण ऋणात्मक है और यह प्रदर्शित करता है कि जांच की अवधि में घरेलू उद्योग को कोई क्षित नहीं हई।

## IV. पाटन एवं क्षति की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

- 70. घरेलू उद्योग ने अपने प्रस्तुतिकरण में यह दावा किया है कि निर्णायक समीक्षा के अंतर्गत यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने से घरेलू उद्योग को क्षित एवं पाटन की निरंतरता बने रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है। यह प्राधिकारी की जानकारी में लाए गए ऐसे सभी कारकों की जांच यह प्रतिपादित करने के लिए कि क्या शुल्क की समाप्ति कर देने से पाटन एवं क्षित की निरंतरता बने रहने की संभावना है। प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि क्या पाटनरोधी शुल्क को वापस ले लिए जाने की स्थिति में भी संबद्ध वस्तु का भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर आते रहने की संभावना है और क्या इस शुल्क को हटा दिए जाने की स्थिति में इन पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षिति होने की संभावना है।
- 71. सतत पाटन एवं क्षिति की जांच करने के पश्चात घरेलू उद्योग को पाटन एवं क्षिति की पुनरावृत्ति होने या उसकी निरंतरता बने रहने की संभावना की जांच भी प्राधिकारी द्वारा विभिन्न बने रहने की संभावना की जांच भी प्राधिकारी द्वारा विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जांच की कार्रवाई के दौरान प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों एवं सूचना के आधार पर की गई है।
- 72. पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति एवं पाटन की संभावना के संबंध में याचिकाकर्ताओं ने यह दावा किया है कि :
  - (i) पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर देने से पाटन बने रहने एवं घरेलू उद्योग को क्षित होने की संभावना है। यह तथ्य जांच की अविध की पश्चात की अविध में भारी कीमत अधोरदन एवं कीमत अधोविक्रयण,चीन में अत्यिधिक क्षमताओं एवं इंडोलिनोन की आयात कीमतों से स्पष्ट हो जाता है।
  - (ii) भारत और चीन ही दो ऐसे ज्ञात देश हैं जिनके पास इस विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने की क्षमता है। याचिकाकर्ता चीन के उत्पादकों के साथ विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और इसलिए उनको चीन की बेशी क्षमताओं के संबद्ध में और उन न्यून कीमत की जानकारी है जिस पर वे निर्यात कर सकते हैं।
  - (iii) चीन के कुछ आपूर्तिकर्ता की निर्यातोन्मुखता से यह सुझाव मिलता है कि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने से भारतीय बाजार में उन्हें अपने माल का पाटन करने के लिए एक द्वार मिल जाएगा।
  - (iv) प्रभावी पाटनरोधी शुल्क चीन से डायक्लोफेनक सोडियम के आयातों की मात्रा पर नियंत्रण लगाने में सक्षम रहा है।
  - (v) यह तथ्य कि चीन के उत्पादक इंडोलिनोन का निर्यात कर रहे हैं और वह कीमत जिस पर चीन के उत्पादक भारतीय बाजार में इंडोलिनोन का निर्यात कर रहे हैं. स्पष्टत: यह दर्शाती है कि वह कीमत क्या

- है जिस पर चीन के उत्पादक, पाटनरोधी शुल्क की अनुपस्थिति में विचाराधीन उत्पाद का निर्यात कर सकते हैं।
- (vi) आयात कीमत में वृद्धि और उसके परिणामस्वरूप वर्तमान अवधि में आयात की मात्रा में गिरावट कृत्रिम है और यह लंबित निर्णायक समीक्षा के कारण दिखाई जा रही है।
- (vii) भारतीय बाजार में प्रचलित कीमतें, यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है तो विदेशी उत्पादकों को अपना माल भारी मात्रा में यहां लाने के लिए काफी आकर्षक हो जाएंगी।
- (viii) जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में आयातों की उतराई कीमत घरेलू उद्योग की गैर-क्षितकारी कीमत तथा बिक्री कीमत से बहुत कम है। आयातों से कीमत निग्रहण पहले से ही हो रहा था। इसके परिणामस्वरूप जब जांच की अवधि के दौरान कीमतों में बढ़ोत्तरी हो रही थी तो घरेलू उद्योग अपनी कीमतों में वृद्धि करने में अक्षम था।
- (ix) यदि डायक्लोफेनक सोडियम पर मौजूदा पाटनरोधी शुल्क हटा लिया जाता है तो संबद्ध देश से डायक्लोफेनक सोडियम के आयात में निश्चित रूप से वृद्धि होगी।
- (x) वर्तमान जांच की अवधि में डीएफएस की आयात कीमत में वृद्धि हुई है परंतु जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में इसमें भारी गिरावट आई है जैसाकि अधोलिखित तालिका से देखा जा सकता है :

वर्ष	चीन जन.गण.		
	मात्रा (एमटी)/ डीएफएस	कीमत (रुपए/किलोग्राम	
2009-10	142.21	295.33	
2010-11	47.38	352.43	
2011-12	88.20	436.41	
जांच की अवधि (अक्तूबर 2011-दिसम्बर 2012)	63.30	512.90	
2012-13	29.10	543.46	
अप्रैल-13	12.70	448.56	
म <del>ई</del> -13	16.70	439.12	
जून-13	19.50	431.21	

(xi) इंडोलिनोन और डीएफएस की कीमतों में जांच की अविध में वृद्धि हुई और जांच की अविध के पश्चात की अविध में इसमें गिरावट आई है। इसलिए, यह घरेलू उद्योग के इस तर्क का समर्थन करती है कि जांच की अविध में डीएफएस की कीमत पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में संभावित स्थिति का निर्धारण करने के लिए प्रतिनिधिक कीमत नहीं है।

वर्ष	आयात कीम	आयात कीमत रुपए/किलोग्राम		
	इंडोलिनोन	डीएफएस		
2009-10	331.55	295.33		
2010-11	345.83	352.43		
2011-12	390.76	436.41		
जांच की अवधि (अक्तूबर 2011-दिसम्बर 2012)	438.94	512.90		
2012-13	450.59	543.46		

(xii) चीन के उत्पादकों के पास भारी बेशी क्षमता है जिसे ज्ञात चीनी उत्पादकों की क्षमता दर्शाने वाली अधोलिखित तालिका से देखा जा सकता है। याचिकाकर्ता पुन: यह प्रस्तुत करते हैं कि चीन के उत्पादकों की यह विस्तृत एवं संपूर्ण सूची नहीं है।

क्र.सं.	कंपनी	आपूर्ति क्षमता (एमटी/वर्ष)
1	झेजियांग कैमिकल्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट कारपोरेशन	1,200
2	टीएनएन डेवलपमेंट लिमिटेड	6,240
3	हैंगझोऊ यूनिवाइज इंटरनेशनल कंपनी लिमिटेड	1,200
4	जियाक्सिंग सन्स इंटरनेशनल ट्रेड कंपनी लिमिटेड	1,000
5	हैंगझोऊ रूइजियांग	520
6	हेनान टियान्फू कैमिकल्स	2,000
7	चाइना फूड फर्म ग्रुप कंपनी लिमिटेड	1,500
8	तंगयिंग योन्गी	1,000
9	कुल आपूर्ति क्षमता	14,660

(xiii) इसके अतिरिक्त, तालिका यह दर्शाती है कि ज्ञात चीन के उत्पादकों की निर्यात उन्मुखता स्पष्टत: यह दर्शाती है कि चीन के उत्पादकों की निर्यात उन्मुखता बहुत अधिक है।

क्र.सं.	कंपनी	निर्यात %
1	चाइना फूड फार्म ग्रुप कंपनी लिमिटेड	71%-80%
2	यनान चांगताई फार्मास्युटिकल्स कंपनी लिमिटेड	31%-40%
3	अन्हुई सन्ट्रान कैमिकल्स कंपनी लिमिटेड	71%-80%
4	हुबेई यांगचेंग फार्मास्युटिकल्स कंपनी लिमिटेड	41%-50%
5	सुझोऊ टोपरन इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड	91%-100%

- (xiv) यद्यपि, घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं उसकी बिक्री क्षमता में वृद्धि हुई है तथापि जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में प्रति युनिट लाभप्रदायकता में कमी आई है।
- (xv) पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर देने से पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना बढ़ जाएगी।
- (xvi) पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में इस उत्पाद का और अधिक तेजी से पाटन होने की संभावना है और इससे घरेलू उद्योग की कीमत का अधोरदन और भी अधिक होगा।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

73. वर्तमान जांच चीन से संबद्ध वस्तु के आयातों पर अधिरोपित पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा है। नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी को यह निर्धारित करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटनरोधी शुल्क का सतत अधिरोपण वांछित है। इसके लिए इस तथ्य की जांच करना भी अपेक्षित होता है कि क्या अधिरोपित शुल्क क्षतिकारी पाटन को दूर करने के अपने आशयित शुल्क क्षतिकारी पाटन को दूर करने के अपने आशयित उद्देश्य को पूरा कर रहा है। वर्तमान जांच में, पाटित आयातों की निरंतरता है। इसके अतिरिक्त, पाटन मार्जिन मूल जांच में तथा वर्तमन जांच दोनों में बहुत अधिक है और इस संबद्ध वस्तु के लिए मांग एवं कीमत के रूप में भारतीय बाजार में अनुकूल परिस्थितियां हैं। प्राधिकारी यह विचार करते हैं कि यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि यदि पाटनरोधी

शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो पाटन में वृद्धि नहीं होगी। निम्नलिखित विश्लेषण यह दर्शाती है कि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिए जाने की स्थिति में पाटन और उसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षिति होने की संभावना बहुत अधिक है।

## मौजूदा एवं विगत पाटन एवं क्षति मार्जिन का स्तर

#### 74. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :

- (i) वर्तमान जांच ने जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में सकारात्मक पाटन मार्जिन दर्शाता है। विगत की जांच में सकारात्मक पाटन मार्जिन प्रदर्शित किया गया है। आयातों की मात्रा काफी अधिक बनी रही।
- (ii) प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि वर्तमन अविध में कीमतें सकारात्मक पाटन मार्जिन प्रदर्शित करती हैं और वे पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में उस संभावित स्थिति की संकेतक हैं जिनमें पाटन और अधिक तीव्र हो जाने की संभावना है।
- (iii) क्षति मार्जिन यद्यपि जांच की अवधि में ऋणात्मक है परंतु यह जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में सकारात्मक है।

## चीन के आपूर्तिकर्ताओं की निर्यात उन्मुखत एवं आपूर्ति करने की क्षमता

(iv) प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन के निर्यातक मुख्यत: निर्यात उन्मुख हैं। चीन के उत्पादकों की आपूर्ति क्षमता कुल भारतीय मांग की तुलना में बहुत अधिक है। इस तथ्य पर विचार करते हुए कि इस उत्पाद का उत्पादन केवल चीन और भारत में ही किया जाता है, पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर देने से भारतीय बाजार में इस उत्पाद के पाटन की तीव्रता और अधिक हो जाने की संभावना है।

## भारतीय बाजार की कीमत आकर्षकता

(v) प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में पाटन एवं क्षति मार्जिन सकारात्मक है जो यह प्रदर्शित करता है कि भारतीय बाजार में कीमत आकर्षकता है।

# तीसरी दुनियां के देशों को भारी निर्यात

- (vi) इस विचाराधीन उत्पाद का चीन से तीसरी दुनियां के देशों को निर्यात बहुत अधिक मात्रा में किया जाता है। वास्तव में इस उत्पाद का उत्पादन केवल भारत और चीन में ही किया जाता है। प्राधिकारी पुन: यह नोट करते हैं कि यद्यपि, जहां तक जांच की अविध के पश्चात ही अविध में संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात किए जाने का संबंध है, जांच की अविध के पश्चात की अविध में पाटन एवं क्षिति मार्जिन सकारात्मक है, और यह भारत में संबद्ध वस्तु के संभावित पाटन और उससे घरेलू उद्योग को होने वाली संभावित क्षित दर्शाता है फिर भी प्राधिकारी ने विश्व व्यापार एटलस आंकड़ों का विश्लेषण किया है ओर यह विश्लेषण दर्शाता है कि जांच की अविध के पश्चात की अविध में चीन से तीसरी दुनियां के देशों को होने वाले अधिकांश निर्यात भारत में निर्यात कीमत से बहुत कम कीमतों पर किए गए हैं। इसलिए पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में, चीन से इस विचाराधीन उत्पाद का पाटन बढ़ जाने की संभावना है।
- 75. उपर्युक्त के आधार पर, प्राधिकारी यह उपपादित करते हैं कि :
  - (i) चीन के उत्पादकों ने जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के पश्चात्, की अवधि में पाटित कीमतों पर इस उत्पाद का निर्यात किया है।

- (ii) जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में डीएफएस की आयात कीमत जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना में बहुत कम है जो जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में क्षति मार्जिन दर्शाता है।
- (iii) इस विचाराधीन उत्पाद के संबंध में चीने के उत्पादकों के पास भारी उत्पादन क्षमता है।
- (iv) चीन के उत्पादकों की बहुत अधिक निर्यातोन्मुखता है और भारत में पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित रहने के बावजूद भी पाटित आयातों का आना निरंतर बना रहा।
- (v) कीमत निग्रहण यह इंगित करता है कि यदि प्रभावी पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के विपरीत कीमत प्रभाव पड़ने की संभावना है। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से आयातों की चुनौती का सामना करना होगा।
- (vi) इस उत्पाद की जांच की अवधि के पश्चात की आयात कीमत वस्तुत: घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है, जो यह दर्शाता है कि चीन से होने वाले आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर निग्रहणकारी प्रभाव पड़ेगा।
- (vii) यदि चालू पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो इस विचाराधीन उत्पाद का संबद्ध देश से पाटन और अधिक तीव्र होने की संभावना है; कीमत अधोरदन सकारात्मक है।
- (viii) जांच की अवधि के पश्चात की अधिकांश अवधि में इस उत्पाद की वह आयात कीमत जिस पर इसका तीसरी दुनिया के देशों को निर्यात किया गया। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से वस्तुत: कम है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि यदि इन निर्यातों का भारत की ओर मोड़ दिया जाता है तो उसे घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है।
- (ix) उपर्युक्त के मद्देनजर यदि मौजूदा शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो चीन के निर्यातक अपने उत्पाद को भारतीय बाजार की ओर सरणीकृत कर देंगे क्योंकि उनके पास पहले से ही बेशी क्षमताएं हैं और वे वास्तव में अपने उत्पाद की तीसरी दुनिया के देशों को काफी कम कीमतों पर निर्यात कर रहे हैं।
- (x) इन सब परिस्थितियों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो पाटन एवं क्षति की संभावना बनी रहेगी।

## छ. कारणात्मक संबंध

76. नियमावली के अनुबंध-॥ में कारणात्मक संबंधों के बारे में प्रावधान किया गया है कि :

"यह प्रदर्शित होना चाहिए कि पाटित आयात, पाटन के प्रभाव से, जैसािक ऊपर पैराग्राफ (ii) और (iv) में निर्धारित किया गया है, घरेलू उद्योग को क्षिति कारित कर रहे हैं। पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को क्षिति के बीच कारणात्मक संबंधों का प्रदर्शन निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत संगत साक्ष्यों की जांच पर आधारित होना चाहिए। निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटित आयातों के अलावा उन अन्य ज्ञात कारकों को भी जांच करेंगे जो उसी समय पर घरेलू उद्योग को क्षिति पहुंचा रहे हैं तथा इन अन्य कारकों द्वारा कारित की जा रही क्षिति के लिए पाटित आयातों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाना चाहिए। इस संबंध में जो कारक संगत हो सकते हैं, उनमें अन्य बातों के साथ-साथ, उन आयातों की कीमत और मात्रा जिनकी पाटित कीमतों पर बिक्री नहीं की गई है, मांग में संकुचन, खपत की प्रणाली में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और घरेलू एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल है।"

- 77. प्राधिकारी ने यह जांच की कि क्या इन नियमों के अंतर्गत सूचीबद्ध कारक घरेलू उद्योग को क्षति कारित कर रहे हैं।
  - (क) उन आयातों का मूल्य एवं मात्रा जिनकी बिक्री पाटित कीमतों पर नहीं की गई

78. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग चीन से होने वाले पाटित आयातों से क्षित का सामना कर रहा है। अन्य देशों से होने वाले आयातों की मात्रा बहुत अधिक नहीं है। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि इस विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन केवल भारत और चीन में ही किया जाता है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि आयात की उस मात्रा ने घरेलू उद्योग को क्षित कारित की है जिसकी बिक्री पाटित कीमतों पर नहीं की गई।

## (ख) मांग में संकुचन

79. इस विचाराधीन उत्पाद की मांग बहुत अधिक रही। इसके अतिरिक्त, भारत और चीन ही केवल दो ऐसे देश हैं जो इस उत्पाद का उत्पादन कर रहे हैं। इसलिए ऐसी स्थिति में पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योग को क्षिति और अधिक तीव्र हो जाने की संभावना है।

## (ग) खपत की प्रणाली में परिवर्तन

80. इस विचाराधीन उत्पाद की खपत की प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए, खपत की प्रणाली में परिवर्तन वह कारक नहीं है जिसने घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई हो।

## (घ) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रियाएं और घरेलू एवं विदेशी उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

81. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रक्रिया नहीं है जो घरेलू उद्योग को क्षति का एक संभावित कारण हो सकती हो।

## (ड.) प्रौद्योगिकी में विकास

82. इस उत्पाद का उत्पादन करने की प्रौद्योगिकी में न तो कोई परिवर्तन हुआ है और न ही निकट भविष्य में कोई परिवर्तन होने की संभावना है। इसलिए प्रौद्योगिकी में विकास क्षति का एक कारक नहीं हो सकता है।

## (च) निर्यात निष्पादन

83. याचिकाकर्ता इस विचाराधीन उत्पाद का निर्यात करता है। क्षित अविध के दौरान निर्यात की मात्रा में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, घरेलू बिक्रियों से संबंधित सूचना पर क्षित का आकलन करने के लिए यथासंभव सीमा तक विचार किया गया।

विवरण	यूनिट	2009-10	2010-11	2011-12	अक्तूबर-11 से दिसम्बर-12
निर्यात बिक्री	एमटी	365	468	392	710

# (छ) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित एवं बिक्रीकृत अन्य उत्पादों का निष्पादन

- 84. याचिकाकर्ता बहु उत्पाद कंपनियां हैं। इस विचाराधीन उत्पाद के लिए प्रदान कराई गई सूचना में अन्य उत्पादों के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई है। प्राधिकारी ने इस विचाराधीन उत्पाद के संबंध में केवल वर्तमान प्रयोजनार्थ ही भरोसा किया है। इसलिए अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग को दावाकृत क्षति कारित नहीं करता है।
- 85. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी यह प्रतिपादित करते हैं कि नियम को अंतर्गत सूचीबद्ध अन्य कारकों ने घरेलू उद्योग को दावाकृत क्षति कारित नहीं की है। प्राधिकारी ने इसके पश्चात उन कारकों की जांच की जो यह सिद्ध करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटन की निरंतरता के कारण कारित की गई है।
  - (i) यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो संबद्ध देश से आयात भारी कीमत अधोरदन करेंगे।

- (ii) जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में आयातों की कीमत और क्षति अवधि के दौरान तथा उसके पश्चात इंडोलिनोन की आयात कीमत स्पष्टत: यह दर्शाती है कि इन आयातों से, पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर देने की स्थिति में, भारी कीमत अधोरदन एवं अधोविक्रयण होगा।
- (iii) पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर दिए जाने की स्थिति में भारी कीमत अधोरदन होने से इस बात की संभावना अधिक है कि उपभोक्तागण उसे ही अधिक पसंद करने लगे।
- (iv) चूंकि प्रभावी पाटनरोधी शुल्क जांच की अवधि में चीन से आयातों की मात्रा पर नियंत्रण रखने में काफी अधिक सीमा तक कारगर रहे हैं और इसलिए यह विश्वास करने के पर्याप्त कारण हैं कि यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि संबद्ध देश के उत्पादकों की भारी बेशी क्षमताएं हैं, इस आयात मात्रा में निश्चित रूप से भारी वृद्धि होगी।
- (v) यदि शुल्क का प्रतिसंहरण कर लिया जाता है और उसके परिणामस्वरूप संबद्ध देश से आयातों में वृद्धि होती है तो इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए संबद्ध उत्पाद गैर-स्टीरिओडल एंटी इन्फ्लेमेटरी उत्पाद है। घरेलू उद्योग को संबंधित उत्पाद की कीमतों में भारी कमी करने के लिए मजबूर किया जाएगा।
- (vi) पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को अपनी कीमतें कम करने के लिए मजबूर किया जाएगा। इसका घरेलू उद्योग की लाभप्रदता पर सीधा प्रभाव पड़ेगा। लाभ में गिरावट से नकदी प्रवाह और निवेश पर प्रतिलाभ में गिरावट जाएगी। यदि घरेलू उद्योग अपने सामान्य कीमत स्तर को बनाए रखना चाहता है तो इसकी बिक्री मात्रा समाप्त हो जाने की संभावना है क्योंकि उपभोक्तागण आयातित वस्तु खरीदना अधिक पसंद करेंगे।
- 86. अत:, यह निष्कर्ष निकालने जाता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त कर देने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षिति होने की संभावना है। यदि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो इस उत्पाद का पाटित कीमतों पर निर्यात होने की संभावना है ओर यदि वर्तमान शुल्क में और अधिक वृद्धि नहीं की गई तो घरेलू उद्योग को क्षिति होने की संभावना है।

## क्षति की मात्रा एवं क्षति मार्जिन

87. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत का निर्धारण नियमावली में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर किया है। घरेलू उद्योग की गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए संबद्ध देश से आयातित संबद्ध आयातों के उतराई मूल्य से की है। इस प्रकार क्षति मार्जिन का निर्धारण निम्नवत किया गया है:

	जांच की अवधि	जांच की अवधि के पश्चात की अवधि
विवरण	यूएसडी/एमटी	यूएसडी/एमटी
गैर-क्षतिकारी कीमत (एनआईपी)	***	***
उतराई कीमत	***	***
क्षति मार्जिन	***	***
क्षति मार्जिन-%	***	***
क्षति मार्जिन-% रेंज	(0-10)	15-25

### भारतीय उद्योग का हित

88. पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्यत: उस पाटन का उपशमन करना होता है जो घरेलू उद्योग को क्षति कारित पर रहा हो और भारतीय बाजार में खुली और पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा का ऐसा माहौल पुन:स्थापित करना होता है जो देश में आम हित में हो। प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण भारत में इस संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके विनिर्मित उत्पाद के कीमत स्तर को प्रभावित कर सकता है और उसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की संगत प्रतिस्पर्धात्मकता भी प्रभावित हो सकती है। तथापि, पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण करने से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी शुल्क की निरंतरता पाटित प्रक्रियाओं द्वारा अर्जित अनुचित लाभ को दूर करेगी, घरेलू उद्योग को पतन से बचाएगी और उपभोक्ताओं को संबद्ध वस्तु के व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में सहायता करेगी। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की निरंतरता संबद्ध देशों से आयात को किसी भी ढंग से प्रतिबंधित नहीं करेगी और इसलिए, उपभोक्ताओं को इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी। उपभोक्तागण आपूर्ति के दो या उससे अधिक स्रोत अब भी बनाए रख सकते हैं।

## हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतीकरण

## विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतीकरण

89. किसी भी निर्यातक/प्रयोक्ता और अन्य विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षकार ने प्रकटन पश्चात कोई विवरण प्रस्तुतिकरण नहीं किया है।

## घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण

- 90. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण संक्षेप में निम्नलिखित है :
  - (i) किसी भी विदेशी उत्पादक ने इस समीक्षा जांच में न तो सहयोग किया और न ही प्रतिभागिता की।
  - (ii) निर्यात पाटित कीमतों पर आते रहे। इंडोलिनोन के आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है।
  - (iii) पाटनरोधी शुल्क के अभाव में कीमत अधोरदन और कीमत अधोविक्रयण पर्याप्तत: सकारात्मक है।
  - (iv) घरेलू उद्योग की वास्तविक उत्पादन लागत और निवेश को निवल मौजूदा मूल्य पर प्रतिलाभ पर विचार करते हुए गैर-क्षतिकारी कीमत का पुर्निर्धारण किया जा सकता है।
  - (v) पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन दोनों ही महत्वपूर्ण है तथा जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में सकारात्मक है, जिससे पाटन एवं क्षति की संभवना बनी हुई है।
  - (vi) डायक्लोफेनेक सोडियम पर पाटनरोधी शुल्क पांच अन्य वर्षों की अवधि के लिए बढ़ाया जाना अपेक्षित है।
  - (vii) यह शुल्क निर्धारित रूप एवं यूएस डालर रूप में अधिरोपित की जानी चाहिए।

#### प्राधिकारी द्वारा जांच

91. प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग के उपर्युक्त तर्क पुनरावर्ती हैं और उनके प्राधिकारी द्वारा प्रकटन विवरण में पहले ही निराकरण कर दिया गया है और उनका इस अंतिम जांच परिणाम में एक बार फिर समुचित शीर्षकों के अंतर्गत समाधान कर दिया गया है।

#### ज. निष्कर्ष एवं सिफारिश

92. प्राधिकारी नोट करते है कि चीन के किसी भी निर्यातक और भारत के किसी आयातक/प्रयोक्ता और अन्य विरोधी हितबद्ध पक्षकारों ने इस जांच में भाग नहीं लिया अर्थात उन्होंने न तो जांच शुरुआत पश्चात प्रत्युत्तर प्रस्तुत किए और न ही मौखिक सुनवाई में भाग लिया अथवा प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण भी नहीं किया। घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए तर्कों, प्रदान कराई गई सूचना और दिए गए प्रस्तुतिकरणों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपस्थित तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तथा पाटन एवं क्षिति की निरंतरता की संभावना के विश्लेषण सहित, उपर्युक्त विश्लेषण तथा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात विवरण प्रस्तुतिकरण के आधार पर, प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- क) इस विचाराधीन उत्पाद का चीन से लगातार पाटन हो रहा है। यद्यपि जांच की अवधि में डायक्लोफेनक सोडियम के आयात की मात्रा में गिरावट आई है वही एक मध्यवर्ती उत्पाद इंडोलिनोन के आयात में जांच की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ख) यद्यपि घरेलू कुछ हद तक अपने उत्पादन में सुधार करने में सक्षम था परंतु यह वृद्धि इसकी क्षमता में वृद्धि के अनुपात में नहीं था।
- ग) घरेलू उद्योग को कीमत निग्रहण सहन करना पड़ रहा है।
- घ) यद्यपि उत्पादन लागत और बिक्री कीमत दोनों में वृद्धि हुई, तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि उसकी उत्पादन लागत में हुई वृद्धि की तुलना में कम थी।
- ङ) चीन के उत्पादकों ने जांच की अवधि तथा जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में पाटित कीमतों पर इस उत्पाद का निर्यात किया है।
- च) जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में डीएफएस की आयात कीमत जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में गैर-क्षतिकारी कीमत की तुलना में बहुत कम है जो जांच की अवधि के पश्चात की अवधि में क्षति मार्जिन दर्शाता है।
- छ) इस विचाराधीन उत्पाद के संबंध में चीने के उत्पादकों के पास भारी उत्पादन क्षमता है।
- ज) चीन के उत्पादकों की बहुत अधिक निर्यातोन्मुखता है और भारत में पाटनरोधी शुल्क अधिरोपित रहने के बावजूद भी पाटित आयातों का आना निरंतर बना रहा।
- झ) कीमत निग्रहण यह इंगित करता है कि यदि प्रभावी पाटनरोधी शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के विपरीत कीमत प्रभाव पड़ने की संभावना है। पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से आयातों की चुनौती का सामना करना होगा।
- ञ) इस उत्पाद की जांच की अवधि के पश्चात की आयात कीमत वस्तुत: घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है, जो यह दर्शाता है कि चीन से होने वाले आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर निग्रहणकारी प्रभाव पड़ेगा।
- ट) यदि चालू पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो इस विचाराधीन उत्पाद का संबद्ध देश से पाटन और अधिक तीव्र होने की संभावना है; कीमत अधोरदन सकारात्मक है।
- ठ) जांच की अविध के पश्चात की अधिकांश अविध में इस उत्पाद की वह आयात कीमत जिस पर इसका तीसरी दुनिया के देशों को निर्यात किया गया। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से वस्तुत: कम है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि यदि इन निर्यातों का भारत की ओर मोड़ दिया जाता है तो उसे घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है।
- ड) उपर्युक्त के मद्देनजर यदि मौजूदा शुल्क को समाप्त कर दिया जाता है तो चीन के निर्यातक अपने उत्पाद को भारतीय बाजार की ओर सरणीकृत कर देंगे क्योंकि उनके पास पहले से ही बेशी क्षमताएं हैं और वे वास्तव में अपने उत्पाद की तीसरी दुनिया के देशों को काफी कम कीमतों पर निर्यात कर रहे हैं।
- ढ) इन सब परिस्थितियों से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि पाटनरोधी शुल्क का प्रतिसंहरण कर दिया जाता है तो पाटन एवं क्षति की संभावना बनी रहेगी।
- ण) अत:, प्राधिकारी, घरेलू उद्योग की संभावित क्षति दूर करने के उद्देश्य से, संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निर्णायक पाटनरोधी शुल्क, जो केंद्रीय सरकार द्वारा 30 जुलाई, 2008 की अधिसूचना

सं.91/2008-सीमाशुल्क के तहत उदग्रहण किया था, की निरंतरता बनाए रखने की सिफारिश करना इस संशोधन के साथ आवश्यक समझते हैं कि दिनांक 30 जुलाई, 2008 की अधिसूचना संख्या 91/2008-सीमाशुल्क के तहत 144/-रुपए प्रति किलोग्राम के रूप में उदग्रहित सीमाशुल्क अब संशोधित करके 2,715 यूएसडी प्रति एमटी पढ़ी जाए।

- 93. इस अधिसूचना के प्रयोजन के लिए आयातों का उतराई मूल्य सीमाशुल्क द्वारा सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत यथानिर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्क के अन्य सभी शुल्क शामिल होंगे।
- 94. केंद्रीय सरकार के इस आदेश के विरूद्ध अपील सीमाशुल्क प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद कर और सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष की जा सकती है।

जे. के .दादू, निर्दिष्ट प्राधिकारी

#### MINISTRY OF COMMERCE & INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING & ALLIED DUTIES)

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 2nd October, 2014

(Final Findings)

Subject: Final Findings Notification in the Sunset Review of anti-dumping duty imposed on the import of Diclofenac Sodium originating in or exported from China PR-reg.

**No. 15/3/2013-DGAD:**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time.

#### A. Background of the case

- 1. Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules or the Rules), definitive anti-dumping duty was originally recommended by the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) on the imports of 'Diclofenac Sodium' (hereinafter referred to as 'DFS' or the subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as subject country) vide Final Findings Notification No. 14/4/2007-DGAD dated 29th May, 2008 and whereas the Central Government imposed the definitive anti-dumping duty w.e.f. 10th April, 2008 vide its Notification No 91/2008-Customs dated 30th July, 2008.
- 2. Whereas M/s Aarti Drugs Ltd and M/s Amoli Organics Pvt Ltd filed a duly substantiated application before the Authority in accordance with the Act and the AD Rules alleging dumping of 'Diclofenac Sodium' originating in or exported from China PR and requested the Authority for review and continuation of the anti-dumping duties in existence.
- **3.** And whereupon in accordance with Section 9 A (5) of the Act, read with Rule 23 of the AD Rules, the Authority issued a public notice dated 9<sup>th</sup> April, 2013, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the sunset review investigation to review the need for continued imposition of duties in force and to examine whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.
- **4.** And whereas, the antidumping duty as notified vide Notification No. 91/2008-Customs dated 30<sup>th</sup> July, 2008 was extended by the Central Government up to 9<sup>th</sup> April, 2014 vide Notification No. 31/2013-Customs (ADD) dated 13<sup>th</sup> November, 2013 in terms of Section 9(A)(5) of the Act.

#### **B.** Procedure

5. In this investigation, the procedure described hereinbelow has been followed:

- i. The Authority received a duly substantiated Sunset Review application from M/s Aarti Drugs Ltd. and M/s Amoli Organics Pvt. Ltd., as domestic industry, for review and continuation of the duty in force on imports of Diclofenac Sodium originating in or exported from China PR. The petitioners submitted prima facie evidence in this regard requesting for review and continuation of the anti dumping duty in force.
- ii. The Authority intimated to the Embassy of China in New Delhi that it has received a petition from the domestic industry to initiate sunset review investigation against imports of the subject goods originating in or exported from China PR.
- iii. The Authority, on the basis of prima facie evidence submitted by the petitioners to justify initiation of the investigation, initiated sunset review investigation against imports of the subject goods originating in or exported from China PR vide initiation notification dated 9<sup>th</sup> April, 2013.
- iv. The scope of the present review covers all aspects of Notification No. 14/4/2007 -DGAD dated 29<sup>th</sup> May, 2008.
- v. The Embassy of China in New Delhi was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.
- vi. The Authority sent copies of initiation notification dated 9<sup>th</sup> April, 2013 to the Embassy of China in India; known exporters/producers from the subject country; known importers and other interested parties in India as per the information available with the Authority. These parties were requested to file response in the form and manner prescribed and make their views known to the Authority in writing within the prescribed time limit. Copies of the exporter's questionnaire and market economy treatment questionnaire were also sent to the known exporters/producers from the subject country. Copies of the letter and the exporter questionnaires sent to the exporters/producers in China PR were also sent to the Embassy of China in India along with a list of known exporters / producers with a request to advise the known exporters / producers from the subject country as also other exporters / producers from the subject country to respond to the questionnaires within the prescribed time limits.
- vii. Questionnaires were sent to the following known exporters/producers in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information:

Cl 1 V'1 D' 1 ' C I 1	G1 1 771'' D1 4' 1 C 1 4 1
Shandong Yibao Biologics Co., Ltd	Shenzhen Zhijun Pharmaceutical Co.,Ltd
Xinglong Industrial Garden,	Block 5, Bagualing Industrial District
Xinglongzhuang Town, Yanzhou City, Shandong	Shenzhen, P.R. China
Province, China	
Comfortcomms Group Co. Limited	Shanxi Haizheng Scientific Tech. and Trade Co., Ltd.
26D, Dushihuayuan, Xinzhou Road,	6/F, Building 1, 17 Liu Lane,
Futian Dist., Shenzhen,	Yingze District, Taiyuan City,
Guangdong, China	Shanxi Province, China
GBB Group Co., Ltd.	Skyrun International Group Sunshine Corporation , 50
Development Zone, Binzhou	Zhonghua Road, Nanjing,
Shandong, China	Jiangsu, China
Hebei Jiheng(Group) Pharmaceutical Co., Ltd., 368	Shandong Reyoung Pharmaceutical Co., Ltd., 6 Erlangshan
Jianshe Street Hengshui City, Hebei , China,	Road, Yiyuan County,
	Shandong Province, China
Hebei Veyong Animal Pharmaceutical Co., Ltd.	Wuhan Lihua International Trade Corporation
383 East Heping Road,	1205B Jiuyun Garden,
Shijiazhuang City,	34 Jianghan North Road,
Hebei Province, China	Wuhan City, Hubei Province, China
Medico (Shijiazhuang) Industries & Trade Co., Ltd.	The TNN Development Limited
Room 7G, Block A, City Garden,	Room 2901, Rainbow Building,
159 Xinhua Road, Shijiazhuang City,	23 Renmin Road, Zhongshan District,
Hebei Province, China	Dalian City,
	Liaoning Province, China

- viii. None of the above producers/exporters or any other producer/exporter filed the questionnaire response.
- ix. Questionnaire was also sent to the following known importers, users and associations of the subject goods in India seeking necessary information:

NATCO PHARMA LIMITED	UNIBIOS LABS LTD.
NATCO HOUSE	5, C-6, Poonam Darshan
Road No : 2,Banjara Hills	Poonam Nagar,
Hyderabad-500 033	Andheri (E), Mumbai-400093
MARKSANS PHARMA LTD.	
Corporate Office	
601-622, 6th Floor,	
Chintamani Plaza,	
Mohan Studio Compound,	
Andheri - Kurla Road, Andheri (East).	
Mumbai - 400 099.	

- x. In response to the initiation notification, none of the importers, users or associations filed importer's questionnaire response.
- xi. The import data for the period of investigation and preceding three years was obtained from the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S).
- xii. The Authority made available the non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6 (7) of the AD Rules.
- xiii. Exporters, producers and other interested parties who neither responded to the Authority nor supplied information relevant to this investigation have been treated as non-cooperating interested parties by the Authority.
- xiv. The Authority has examined the information furnished by the domestic producers to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- xv. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all the interested parties to present their views orally in an Oral Hearing held on 8<sup>th</sup> January, 2014. Only the domestic industry participated in the Oral Hearing. The domestic industry was requested to file written submissions of the views expressed orally. However, after this Oral Hearing, a new incumbent took over as the Authority and, therefore, the new Authority also provided opportunity to all the interested parties to present their views orally in an Oral Hearing held on 5th August, 2014. Again, only the domestic industry participated in the Oral Hearing. The domestic industry was requested to file written submissions of the views expressed orally. However, with reference to the second Oral Hearing, NATCO Pharma Ltd, Hyderabad, submitted a letter to the Authority declaring that they were importing the subject goods for export purpose only and that they had been exporting the same to their overseas customers against the orders. To this effect, NATCO Pharma Ltd submitted copies of some shipping bills and invoices along with the letter. The arguments made in the written submissions received from the domestic industry have been considered, wherever found relevant, in this investigation.
- xvi. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review is October 2011 to December 2012. However, injury analysis covered the years April 2009–March 2010, April 2010-March 2011, April 2011-March 2012 and the POI. The data beyond the POI has also been examined to determine the likelihood of dumping and injury.
- xvii. The verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information and data submitted by the domestic industry.
- xviii. Information provided by the domestic industry on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to the other interested parties.

- xix. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has relied upon the 'facts available'.
- xx. The original date to complete the investigation was up to 08.04.2014. However, at the request of the Authority, this date was extended by the Ministry of Finance up to 08.10.2014.
- xxi. A Disclosure Statement containing the essential facts in this investigation which would have formed the basis of the Final Findings was issued to the interested parties on 23.09.2014. Only the Domestic Industry responded to the Disclosure Statement and no opposing interested party responded to the said Disclosure Statement. The post Disclosure Statement submissions received from the domestic industry have been considered, to the extent found relevant, in this Final Findings Notification.
- xxii. \*\*\* In this Final Findings Notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.
- xxiii. The US exchange rate for the POI has been taken as Rs. 53.04 = 1 US\$ as per notifications issued by the Ministry of Finance.

#### C. Product under consideration and Like Article

#### C.1 Views of the Domestic industry

6. The product under consideration is 'Diclofenac Sodium' (DFS). The product involved in the previous investigation and in the present sunset review investigation is the same as has been held by the Designated Authority in the previous investigation. DFS is a basic organic chemical, normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. DFS is a non-steroidal anti-inflammatory drug (NSAID) taken to reduce inflammation and an analgesic reducing pain in conditions such as in arthritis or acute injury. Diclofenac Sodium is also described as 2-[(2,6-Dichlorophenyl), Amino] Benzene Acetic Acid Mono Sodium Salt; [0-(2,6-Dichloroanilino) Phenyl Acetic Acid Sodium Salt. DFS has two grades-tablet and injectable grade. There is no significant difference in the two grades. DFS is white or slightly yellowish crystalline powder, slightly hygroscopic in nature and sparingly soluble in water. The product is classified under Customs Tariff heading no. 2942.0090. The Customs classification is, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation. The goods produced by the domestic industry and imported from the subject country are like articles in accordance with the Rules.

#### B. 2 Examination by the Authority

- 7. Product under consideration in the present investigation is Diclofenac Sodium originating in or exported from China PR. DFS is a basic organic chemical, normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. DFS is a non-steriodal anti-inflammatory drug (NSAID) taken to reduce inflammation and an analgesic reducing pain in conditions such as in arthritis or acute injury.
- **8.** The present investigation is a sunset review investigation and the authority confirms that the scope of the present investigation is the same as the scope of product attracting anti dumping duty at present.
- 9. This product is classified under Customs Tariff heading no. 2942.0090 as per Indian Trade Classification. The Customs and ITC HS classifications are, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation.
- 10. The product under consideration in the present sunset review will remain the same as in the original investigation.
- 11. The goods manufactured by domestic industry and exported from the subject country are identical and technically and commercially substitutable. Therefore, the Authority holds that the subject goods produced by the domestic industry are like article, as per Rule 2(d) of the Rules Supra, to the product under consideration.

#### D. Scope of the Domestic Industry

#### D. 1 Views of the Domestic industry

12. The petition was filed by M/s Aarti Drugs Ltd. and M/s Amoli Organics Pvt. Ltd. There are three more producers of the product in the country, namely, Kairav Chemicals Ltd, Meditech Chemicals Pvt. Ltd & Sara Exports Ltd, the last two being part of Globus Pharmachem. Notwithstanding that in case of sunset review standing is not

required to be examined, it is submitted that the petitioners command 74% share in total Indian production in the POI and, therefore, constitute a 'major proportion' of the total Indian production.

- **13**. It is further noted that M/s Aarti Drugs Ltd has imported the subject goods under advance license directly as also through their affiliated company, Suyash Laboratories Ltd. It is submitted that:
  - Aarti has imported the product under consideration under Advance Licence. Since imports were for exports, considering past decisions of the Authority, the company should be treated as eligible domestic producer.
  - ii) Aarti has not acted as a trader. Aarti has undertaken significant process on the imported product and has exported the downstream product.
  - iii) Aarti is supporting the present petition. Aarti has not opposed the petition.
  - iv) The behavior of Aarti is not different as compared to other Indian producers who are not importing the subject.
  - v) Aarti predominantly manufactures the product in India. Aarti imports the product from China only under Advance Licence and processes it further to sell downstream product in the market.
  - vi) Aarti is not resorting to imports in order to benefit from dumping. Thrust of Aarti has not turned to imports. The company's thrust continues to be on own production. Aarti has imported the product only to remain competitive in the export market.
  - vii) The proposed anti dumping duty shall apply on exports made by the supplier concerned. Aarti has not sought exclusion for this supplier. Any imports made by Aarti, if not under advance licence, would also have been subjected to such anti-dumping duties.
  - viii) Aarti's production continues to be quite significant. Sale of the product under consideration by Aarti continues to be from production.
  - ix) Imports made by Aarti are quite low considering production and consumption of the product in the country as may be seen from the table below.

Particulars	Unit	Period of Investigation (POI- Oct 2011- Dec 2012)
Imports by Aarti Drugs	MT	***
Total Imports in India	MT	63.35
Production of Aarti Drugs	MT	***
Consumption in India (including captive)	MT	1860
Imports by Aarti Drugs in relation to-		
➤ Imports in India	%	***
Production of Aarti Drugs	%	***
Consumption in India	%	0.54

**14.** However, the company is not related to any producer-exporter of the subject goods outside India or an importer in India. Therefore, the question of possible ineligibility within the meaning of rule 2(b) does not arise.

## **D.2** Examination by the Authority

- 15. Rule 2(b) of the AD Rules defines domestic industry as under:—
  - "(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers"
- 16. The application was filed by M/s Aarti Drugs Ltd. and M/s Amoli Organics Pvt Ltd. on behalf of the domestic industry. There are three more producers of the product in the country, namely, Kairav Chemicals Ltd., Meditech Chemicals Pvt. Ltd. And Sara Exports Ltd., with the last two being part of Globus Pharmachem. While Meditech

- and Sara Exports have extended support to the petition, Kairav Chemicals has neither supported nor opposed the petition. As per the information available, the applicants account for major proportion in the Indian production of the subject goods and, therefore, constitute the domestic industry within the meaning of the Rules.
- 17. It is noted that M/s. Aarti Drugs Ltd. has regularly imported the subject goods under advance license directly as also through their affiliated company, Suyash Laboratories Ltd, for the production of downstream products manufactured for export purpose. It is noted in this regard that the focus of Aarti Drugs Ltd is not for importing the subject goods. Imports have been made under advance license for production of downstream products meant for export sales. The purpose of imports is to remain competitive in the export market of the downstream products. Imports made by Aarti Drugs Ltd constitute insignificant share of total production and consumption in the country. Aarti Drugs Ltd is predominantly a producer of the subject goods and sales made by Aarti Drugs Ltd are from its own production.
- 18. From the imports made by Aarti Drugs Ltd during the POI, the Authority notes that a) the imports are insignificant to cause self-inflicted injury to the domestic industry and b) the imports by Aarti Drugs Ltd got cleared under advance license scheme. In view of this and keeping in view the reasoned position in this regard taken by the Authority in past cases, the Authority does not consider it appropriate to exclude Aarti Drugs Ltd from the scope of the domestic industry.
- 19. The Authority also notes that Rule 2(b) prevailing on the date of initiation of this investigation granted discretion to the Authority in those situations where a domestic producer is either an importer of the subject goods or is related to an importer or exporter of the subject goods in the subject country. This has been upheld by the Hon'ble High Court of Chennai in the matter of Nirma Ltd. vs. Saint Gobain Glass India Ltd. wherein the High Court has, interalia, held as follows:
  - (i) the term "domestic industry" as it was amended on 27.2.2010, has not taken away the discretionary power of the Designated Authority and the Designated Authority is entitled to proceed further;
- 20. In view of the above, the Authority holds that M/s Aarti Drugs Ltd is eligible as domestic industry. The production of the petitioners, namely, M/s Aarti Drugs Ltd M/s Amoli Organics Pvt Ltd. and account for a major proportion in the Indian production of the subject goods. The petitioners, therefore, constitute domestic industry and have standing to file the petition within the meaning of the Rules.

## E. Assessment of Dumping - Methodology and Parameters

# E. 1 Views of the Domestic industry

- 21. The Domestic Industry, in brief, has claimed the following:
  - i. The product under consideration is being produced only in India and China. The Indian producers are selling the product not only in the domestic market but also globally to a large number of countries. In most of these countries, the domestic industry is facing competition from same Chinese suppliers who have been dumping the product in such third countries as well. Since the product under consideration is produced only in India and China; in the larger public interest, it is vital that the product continues to be produced in India, which is possible only if the operations remain viable and the domestic industry is protected from dumping of the product in the country.
  - ii. Diclofenac Sodium has a long history of continued dumping in the country for more than a decade.
  - iii. After imposition of anti-dumping duty, the volume of imports declined. However, there are still significant imports of the product. Though import volume of Diclofenac Sodium has declined, imports of intermediate product (Indolinone) have started entering the country. In fact, the volume of import of Indolinone is increasing.
  - iv. Indolinone is an intermediate in the production of Diclofenac Sodium. The value addition required to convert Indolinone to Diclofenac Sodium is insignificant. Thus, the Chinese exporters have found a way to circumvent anti dumping duty on Diclofenac Sodium by exporting Indolinone to India.
  - v. China's World exports show that there is massive Chinese export to various third countries. Revocation of anti dumping duty would divert exports to India.
  - vi. Chinese producers have huge supply ability for the product under consideration as against a meager Indian demand of around 1300 MT.

- vii. None of the Chinese exporters have responded to the Authority with prescribed questionnaire response.
- viii. In the present case, none of the Chinese producers have claimed MET and therefore in any case, question of granting market economy status to Chinese producers does not arise. In view of the same, the normal value is required to be determined on the basis of Para-7 of Annexure-I to the Rules.
- ix. Petitioners have determined Normal Value in China on the basis of cost of production in India, duly adjusted. Consumption norms of one of the petitioner companies have been considered for major raw materials and power.
- x. Export Price Petitioners had earlier relied upon the IBIS data to assess the volume and value of subject import in India. Post initiation of investigations, the petitioners have procured information with regard to imports from DGCI&S. Analysis of this information shows that the volume and price of imports reported in IBIS and DGCI&S data are quite comparable. Therefore, the Designated Authority is requested to determine export price on the basis of DGCI&S data. The export price has been adjusted for expenses such as ocean freight, marine insurance, commission, port expenses, inland freight, bank commission and VAT difference; which may have been incurred by the exporter for exporting the material to India.
- xi. Exporters and producers from China have continued to dump DFS in the Indian market.
- xii. Dumping of the product under consideration is likely to intensify from subject country, should the current anti dumping duty be revoked.

### E. 2 Views of the opposing interested parties

22. None of the opposing interested party has filed any questionnaire response or legal submission, or has otherwise provided necessary information during the course of the present investigation. However, certain users of the product under consideration, namely, Shital Chemical Industry, Khambhat; Supra Inter Chem, Vadodara; Deedy Chemicals Pvt Ltd; Pharmson Chemical, Ahmadabad; Supra Combines, Vadodara; S N Chemicals, Bhilwara; yhvi Chemicals, Valsad; Base Metal, Vadodara; Meridian Chemibon Pvt Ltd, Mumabai; Itas Pharmaceuticals, Chemicals, Ankleshwaer and Indian Drug Manufacturers' Association, Mumbai, have represented to continue duty on DFS in the light of its low import and low prices of prices Indolinone, used in the manufacture of DFS.

## F. 3 Examination by the Authority

# a) Normal value

- 23. The Authority had sent questionnaires to the known exporters/producers in the subject country, advising them to provide information in the form and manner prescribed. There has been no response to the questionnaire nor has there been any submission by the producers/exporters in China PR.
- 24. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters/producers in terms of the AD Rules.
- 25. As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy may be rebutted, if the exporter(s) /producer(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject goods from People's Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether:
  - ➤ the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

- > the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- > such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- the exchange rate conversions are carried out at the market rate.
- 26. The Authority notes that none of the producers/exporters of the subject goods from China PR has submitted response to either the exporter's questionnaire or the market economy questionnaire consequent upon the initiation notice issued by the Authority. Since none of the Chinese companies has claimed market economy treatment, the Authority has not determined whether any of the Chinese producers could be granted market economy treatment.
- 27. As none of the Chinese producers/ exporters has responded, the Authority has proceeded in accordance with Para 7 of Annexure I to the Rules. The Authority notes that for determination of normal value based on third country cost and prices, the complete and exhaustive data on domestic sales or third country export sales, as well as cost of production and cooperation of such producers in third country is required. No information with regard to prices and costs prevalent in these markets have been provided either by the applicants or by the exporters or other interested parties, nor any publicly available information could be accessed, nor the Chinese companies have responded or made any claim with regard to an appropriate market economy third country. In the absence of sufficient information on record regarding the other methods as are enshrined in para 7 of Annexure I of AD Rules, the Authority has determined the normal value by adopting the method of "other reasonable basis" for the POI and the review being a sunset review, also for the post POI.
- 28. The Authority has, therefore, constructed the normal value for China PR on the basis of the cost of production in India, duly adjusted, including selling, general and administrative expenses and profit and considering the international prices of major raw materials. Accordingly, the constructed normal value for Chinese exporters determined in the POI and post POI is as per the Dumping Margin Table below.

#### **b)** Export Price

29. As none of the exporter/producer has provided any information that can be used for determination of the export price, the Authority has determined the 'Export Price' for all exporters from China PR on the basis of imports into India. For the purpose of determining the net export price, the Authority has taken into account transaction wise import data received from DGCIS. In view of non cooperation from Chinese producers, price adjustments have been allowed on the basis of facts available. Accordingly, export price has been adjusted for ocean freight, marine insurance, commission, port expenses, bank charges, inland freight, VAT difference etc. The net export price determined by the Authority for the POI and the review being a sunset review, also for the post POI is as per the Dumping Margin Table below.

## **C)** Dumping Margin

**30.** On the basis of the normal value and export price so determined at ex-factory level; the dumping margin during the POI and the review being a sunset review, also for the post POI for all exporters/ producers from China PR as per the Dumping Margin Table below:

#### **Dumping Margin Table**

	Unit	POI	Post POI
Particular		(Oct 2011-Dec 2012)	(Jan 2013- Dec 2013)
Exchange Rate	US\$/INR	53.04	58.95
Normal Value	US\$/Kg	***	***
Net Export Price	US\$/Kg	***	***
Dumping Margin	US\$/Kg	***	***
Dumping Margin - %	%	***	***
Dumping Margin range%	%	0-10	15-30

## F. Assessment of Injury and Examination of Causal Link

### **Injury to the domestic industry**

#### F. 1 Views of the domestic industry

- **31**. The Domestic Industry has submitted that:
  - i) Petitioners constitute domestic industry within the meaning of the Rules.
  - ii) The petitioners have claimed injury based on its information relating to the product under consideration.
  - iii) Demand for the product has shown declining trend over the period. The decline in demand to some extent is due to import of Indolinone, which has been converted into DFS and sold in the market.
  - iv) The volume of imports from China has declined over the injury period, which should be attributed to the current antidumping duty in force and imports of intermediate product (Indolinone). In fact, the volume of import of Indolinone is increasing. Should the present anti-dumping duty on Diclofenac Sodium be revoked, there would definitely be increase in the volume of imports of Diclofenac Sodium from the subject country.
  - v) Though the market share of dumped Chinese imports declined over the injury period, the imports have continued to enter at dumping prices.
  - vi) Price undercutting and price underselling is significantly positive in the absence of anti dumping duty.
  - vii) Cessation of anti dumping duty is likely to lead to intensified dumping and injury to the domestic industry. This is clearly established by (i) significant price undercutting, (ii) price underselling, (iii) significant capacities in China.
  - viii) The domestic industry has expanded its capacity. Even though the domestic industry was able to improve its production to some extent, the domestic industry lost sales volume in the POI.
  - ix) Capacity utilization and market share of the domestic industry has continuously declined after increasing upto 2011-12.
  - x) Though the domestic industry has been able to make profits, the profitability in POI has declined as compared to base year 2009-10.
  - xi) Producers/exporters in China are having excessive production capacities.
  - xii) The export orientation of some of the Chinese suppliers suggests that revocation of anti dumping duty would open the floodgates for dumping the material in the Indian market.
  - xiii) The anti dumping duty in force has been effective in keeping a check on the volume of imports from China. In case anti dumping duty is revoked and consequently dumped imports from the subject country increase; the domestic industry would be vulnerable to injury.
  - xiv) Volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand, changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology, the export performance and productivity of the domestic industry have not caused claimed injury to the domestic industry.
  - xv) Factors such as positive price undercutting and price underselling; import causing price suppression, deterioration in performance of the domestic industry in respect of sales volumes, market share, profits, return on investment and cash flow establish that the injury to the domestic industry is being caused by dumped imports.
  - xvi) The anti dumping duty on Diclofenac Sodium is required to be extended further for a period of five years. Further, anti dumping duty needs to be extended to imports of Indolinone to prevent circumvention.
  - xvii) The same quantum and form of anti dumping duty is required to be extended further for the reason that the dumping of product under consideration has significantly shifted to dumping of Indolinone. Further, the price at which Indolinone is imported into India clearly shows that if the present anti dumping duty

is not extended further and if the present quantum of anti dumping duty is not extended to import of Indolinone, the domestic industry is likely to suffer injury. The modification of the quantum of duty shall imply continued injury to the domestic industry, as the imports of Indolinone shall cause injury to the domestic industry.

### F. 2 Views of the opposing interested parties

**32.** None of the opposing interested party has filed any questionnaire response or legal submission, or has otherwise provided necessary information during the course of the present investigation.

### F. 3 Examination by the Authority

- **34.** For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, the indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, magnitude of margin of dumping etc. have been considered in accordance with the Annexure II of the rules supra.
- 35. Present investigation is a sunset review investigation of the anti dumping duty in force. Rule 23 provides that provisions of Rule 11 shall apply on mutatis mutandis basis. The Authority has therefore, determined injury to the domestic industry considering, mutatis mutandis, provisions of Rule 11 read with Annexure II. Further, since anti dumping duties are in force on imports of product under consideration, the Authority considers that the fact of existing anti dumping duties on the product imported from the subject country is required to be considered while examining the injury to the domestic industry. The Authority has examined whether existing measures is required to be extended to counteract dumping and injury.

# I. Volume Effect

**36.** With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. In this regard, Annexure II (ii) of the AD Rules provides as under:

"While examining the volume of dumped imports the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India"

# a.) Assessment of Demand and Market Share

37. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority has added sales volume of the domestic industry and other Indian producers to the total imports into India. Imports for the purpose have been determined on the basis of transaction wise import data received from DGCI&S. Demand for the product over the injury period was as follows.

# **Demand excluding both Indolinone & captive consumption**

Particulars	MT	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Imports-China	MT	142	47	88	51
Imports-Other Countries	MT	-	-	-	0.04
Domestic Industry merchant sales	MT	452	610	572	447
Other Producers' sales	MT	430	370	366	376
Total demand		1,024	1,027	1,026	874
Market Share in Demand	%				

Imports- China	%	13.88%	4.61%	8.59%	5.80%
Imports- Other Countries	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.00%
Domestic Industry merchant sales	%	44.15%	59.37%	55.71%	51.16%
Other Producers' sales	%	41.97%	36.02%	35.69%	43.04%

# **Demand excluding Indolinone & including captive consumption**

	MT	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Imports-China	MT	142	47	88	51
Imports- Other Countries	MT	-	-	-	0.04
Domestic industry sales	MT	452	610	572	447
Captive consumption	MT	72	195	397	348
Other producers' sales	MT	430	370	366	376
Captive of other producers		60	66	61	49
<b>Total Demand</b>	MT	1,157	1,288	1,484	1,270
Market Share in Demand	%				
Imports- China	%	12%	4%	6%	4%
Imports-Other Countries	%	0%	0%	0%	0%
Domestic industry sales	%	39%	47%	39%	35%
Captive consumption	%	6%	15%	27%	27%
Other producers' sales		37%	29%	25%	30%
Captive of other producers		5%	5%	4%	4%
Total Demand		100%	100%	100%	100%

**<sup>38.</sup>** Further, the domestic industry has submitted that volume of imports of Indolinone should also be added in the import volume of Diclofenac Sodium for the purpose of assessment of demand for the ultimate product in the country. In that case the demand position of the country is as follows:

# **Demand including both Indolinone and captive consumption**

Demand including Captive	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Sales of Domestic Industry	MT	524	805	969	795
Sales of Other Indian Producers	MT	490	436	427	425
Imports- Subject Country-DFS	MT	142	47	88	51
Imports- Subject Country- Indolinone	MT	165	210	299	218
Imports from Subject Country-DFS + Indolinone	MT	307	257	387	269
Imports-Other Countries	MT	0	0	0	0.04
Total Demand	MT	1,321	1,498	1,783	1,489
Market Share in Demand including captive					
Domestic Industry	%	40%	54%	54%	53%
Other Indian Producers	%	37%	29%	24%	29%
Subject Country	%	23%	17%	22%	18%
Other Countries	%	0%	0%	0%	0.003%

# Demand including Indolinone and excluding captive consumption

Demand excluding Captive	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Sales of Domestic Industry	MT	452	610	572	447
Sales of Other Indian Producers	MT	430	370	366	376
Imports- Subject Country-DFS	MT	142	47	88	51
Imports- Subject Country- Indolinone	MT	165	210	299	218
Imports- Subject Country-DFS + Indolinone	MT	307	257	387	269
Imports-Other Countries	MT	0	0	0	0.04
Total Demand	MT	1,189	1,237	1,325	1,092
Market Share in Demand excluding captive					
Domestic Industry	%	38%	49%	43%	41%
Other Indian Producers	%	36%	30%	28%	35%
Subject Country	%	26%	21%	29%	25%
Other Countries	%	0%	0%	0%	0.004%

# **39.** The Authority notes that:

- i. The demand for the product under consideration has shown decline in the POI as compared to the base year as well as previous year.
- ii. Whereas the import volume of Diclofenac Sodium has declined, the import volume of Indolinone has increased over the injury period.
- iii. The market share in demand of the subject country declined over the injury period.
- iv. Market share of the domestic industry has increased in the POI as compared to the base year. However, the same has decreased as compared to the previous year.

# b.) Import Volume and market share

**40.** The information regarding imports and market share is provided in the table below.

# **Imports excluding Indolinone**

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
China - DFS	MT	142	47	88	51
Other Countries	MT	-	-	-	0.04
Total Imports	MT	142	47	88	51
Imports in relation to					
> Total Imports	%	100%	100%	100%	100%
> Production	%	16%	4%	7%	4%
Consumption (including captive)	%	11%	4%	5%	3.43%
Consumption (excluding captive)	%	12%	4%	7%	5%

41. Further, the domestic industry has submitted that volume of imports of Indolinone should also be consider in the import volume of Diclofenac Sodium for the purpose of assessment of import volume and market share in DFS.

## **Imports including Indolinone**

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
China - DFS	MT	142	47	88	51
China - Indolinone	MT	165	210	299	218
Other Countries	MT	-	-	-	0.04
Total Imports	MT	307	257	387	269
Imports in relation to					
> Total Imports	%	100%	100%	100%	99.99%
> Production	%	35%	22%	30%	20%
Consumption (including captive)	%	23%	17%	22%	18%
Consumption (excluding captive)	%	26%	21%	29%	25%

- **42.** The Authority notes from the above that:
  - i. The volume of imports of DFS declined in the POI as compared to base year as well as the previous year. However, volume of imports including Indolinone from China has increased in 2011-12 and then declined in the POI as compared to base year 2009-10. The domestic industry has claimed that the present situation exists because of the anti dumping duty in force. Should the present anti dumping duty be revoked, there would definitely be substantial increase in the volume of dumped imports.
  - ii. The market share of subject country in total imports is significant.
  - iii. The market share of imports from the subject country in relation to production and consumption in India is also significant. It is noted that this is despite the anti-dumping duty levied on the imports of the subject goods from the subject country.
- 43. The domestic industry has claimed that though import volumes of Diclofenac Sodium have declined, imports of intermediate product (Indolinone) started coming in the country to circumvent the anti-dumping duty. In fact, the volume of import of this product is increasing and is significant. Should the present anti-dumping duty on Diclofenac Sodium be revoked, there would definitely be increase in the volume of imports of Diclofenac Sodium from the subject country. Further, if the anti-dumping duty is continued only on Diclofenac Sodium, the imports of Indolinone would keep causing injury to the domestic industry. There is a strong likelihood of significant increase in the volume of dumped imports from China. Considering the export potential of the Chinese producers, the volumes would once again surge in the event of revocation of anti-dumping duty or continuation of anti-dumping duty only on imports of Diclofenac Sodium. The authority notes that the issue of circumvention of anti-dumping duty is beyond the purview of present case.

# II. Price Effect

44. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules states as under:

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree."

# a.) Price Undercutting and Price Underselling

- 45. It was examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether there is likelihood of recurrence of adverse price effect in the event of cessation of duty. Since the present investigation is a sunset review investigation, the Authority is required to consider what would be the extent of price undercutting, if the current duties are allowed to cease. In this context, the Authority has undertaken an analysis of the net sales realization, non-injurious selling price of the domestic industry and the landed price of the imports from the subject country during the period of investigation.
- 46. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting and price underselling. For this purpose, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed value of imports from the subject country. The net sales realization was arrived at after excluding excise duty, rebate, discount and taxes. Landed value of imports has been calculated by adding 1% landing charge, applicable basic customs duty and cess to the CIF value of the subject imports. The landed value of imports was compared with net sales realization of the domestic industry so determined. The trend of undercutting and underselling is given below:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Landed price of import	Rs/MT	3,14,993	3,75,900	4,65,467	5,47,054
NSR of domestic industry	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting %	%	***	***	***	***
Price undercutting Range%		25-60	15-30	15-35	0-15
Non-injurious Price	Rs/MT				***
Price Underselling	Rs/MT				(***)
Price Underselling	%				(***)
Price Underselling Range	%				(0-10)

#### **47.** The Authority notes that:

- a. The landed price of imports was below the selling price of the domestic industry, thus resulting in price undercutting in the market. Further, the level of price undercutting was significant.
- b. The landed price of imports was above the NIP of the domestic industry. Thus, the imports were not resulting in price underselling in the market.

# **b.)** Price suppression/depression

- **48.** The Authority notes that in a sunset review investigation, the Authority is required to examine whether there was a significant adverse price effect by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether there is likelihood of significant adverse price effect in case of revocation of anti dumping duty.
- 49. To examine price suppression and depression effect, the Authority has examined cost of sales and selling price per unit of the domestic industry during the POI and the injury period. The trends in this regard are given in the table below:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
Indexed		100	114	130	133
Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Indexed		100	97	123	126

50. From the above, the Authority notes that cost of sales of the domestic industry increased consistently over the injury period. The Authority further notes that the selling price also shows the same trend except in 2010-11. However, the increase in the selling price is less than the increase in the cost of sales in the POI as compared to

the base year. Whereas the cost of production increased by 33%, the selling price increased only 26%. Thus, cessation of anti dumping duty would lead to significant adverse price suppression effect in the domestic market.

#### III. Economic Parameters Affecting Domestic Industry

**51.** As per the Annexure II to the AD Rules, the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of the imports of subject goods on domestic producers of the subject goods. The relevant extract of the said Rule is reproduced herein below –

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

### a) Sales, Capacity, Production, and Capacity Utilization

**52.** The volume of domestic production and effects of dumped imports on the domestic operation of the domestic industry have been examined in terms of total production, capacity utilization and domestic sales of the domestic industry. Capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry have been as under:-

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Installed capacity	MT	1,060	1,340	1,520	1,640
Production	MT	872	1,194	1,269	1,354
Capacity Utilization	%	82%	89%	84%	83%
Domestic Sales	MT	452	610	572	447
Captive sales	MT	73	194	396	347
Export sales	MT	365	468	392	568
Total Sales	MT	890	1,272	1,360	1,362

- **53.** The Authority notes that:
  - a. The domestic industry has expanded its capacity throughout the injury period.
  - b. Production of the domestic industry increased over the injury period.
  - c. Capacity utilization of the domestic industry increased up to 2010-11 and then declined till POI.
  - d. Domestic sales increased up to 2010-11 and then declined till POI.
  - e. The domestic industry has been able to enhance capacities for the product under consideration and increase its production & sales after imposition of anti-dumping duty.

## b) Market Share

**54.** Market share of domestic industry and other parties are as follows:

# (a) Excluding Indolinone imports and excluding captive consumption

Particulars	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Market Share in Demand	%				
Imports SSR China	%	13.88%	4.61%	8.59%	5.80%
Other Countries	%	0.00%	0.00%	0.00%	0.005%
Domestic industry	%	44.15%	59.37%	55.71%	51.16%
Other Producers	%	41.97%	36.02%	35.69%	43.04%

# (b) Excluding Indolinone imports and including captive consumption

Particulars	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Market Share in Demand	%				
Imports SSR China	%	12%	4%	6%	4%
Other Countries	%	0%	0%	0%	0.003%
Domestic industry sales	%	39%	47%	39%	35%
Captive consumption	%	6%	15%	27%	27%
Other producers		37%	29%	25%	30%
Captive of other producers		5%	5%	4%	4%
Total Demand		100%	100%	100%	100%

# (c) Including Indolinone imports and including captive consumption

Market Share in Demand including captive	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Domestic Industry	%	40%	54%	54%	53%
Other Indian Producers	%	37%	29%	24%	29%
Subject Country	%	23%	17%	22%	18%
Other Countries	%	0%	0%	0%	0.003%

# (d) Including Indolinone imports and excluding captive consumption

Market Share in Demand excluding captive	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Domestic Industry	%	38%	49%	43%	41%
Other Indian Producers	%	36%	30%	28%	34%
Subject Country	%	26%	21%	29%	25%
Other Countries	%	0%	-	-	0.004%

55. It is noted from the table above that the market share of the domestic industry has improved and market share of dumped Chinese imports declined over the injury period. The domestic industry has contended that anti dumping duty has been able to help them in improving its share in the market but revocation of anti dumping duty is likely to result in decline in market share of the domestic industry, given the current import prices of the product and import prices of Indolinone in the POI.

# c) Profitability

**56.** The cost of sales, selling price and profit and loss of the domestic industry shows as follows:

Particulars	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
Indexed		100	114	130	133
Selling price	Rs/MT	***	***	***	***
Indexed		100	97	123	126
Profit/loss	Rs/MT	***	***	***	***
Indexed		100	9	86	86

### 57. It is noted that: -

- a. Cost of sales increased over the injury period.
- b. Selling price of the domestic industry also increased in the same period. However, the increase in selling price was far lower than increase in cost.
- c. Whereas both the selling price and the costs have increased, the increase in cost (33%) is significantly higher than the increase in the selling price (26%).

# d) Cash Profit and Return on Investment

**58.** Cash profit and return on investments earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market were as under: -

Particulars	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI (annualized)
Profit/loss	Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed		100	12	109	85
Cash Profit	Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed		100	29	116	94
Profit before Interest and Tax	Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed		100	24	109	90
Return on Capital Employed-NFA	%	***	***	***	***
Indexed		100	18	62	48

## **59.** The Authority notes that:

- i) Profit, cash profit and return on investment declined in 2010-11. The profits increased in 2011-12 and then declined in the POI. The profits during POI are lower as compared to previous year as well as the base year.
- ii) Return on investment and cash profits have followed the same trend as that of profits.

#### e) Inventories

**60.** Inventory position of the domestic industry is given in the table below:

Inventories (in MT)	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Average stock	***	***	***	***

**61.** It is seen from the above table that inventories with the domestic industry increased over the injury period. The domestic industry has claimed that they cannot afford to hold high stock of inventories and have to dispose of the same at whatever prices they can sell the product in the domestic or export market. Despite this, the level of inventories increased over the injury period.

# f) Employment, Wages and Productivity

**62.** The number of employees employed by the domestic industry, its productivity and wages paid show as follows:

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Employment	Nos.	330	333	329	332
Wages	Rs. Lacs	***	***	***	***
Productivity Per employee	MT	***	***	***	***

**63.** The Authority notes that employment in the domestic industry has remained almost at the same level, whereas wages have increased during the POI as compared to the previous year as well as the base year. The productivity per employee of the domestic industry has improved in the injury period.

## g) Factors affecting domestic prices

64. Consideration of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market would show that the landed value of imported material from the subject country is significantly below the selling price of the domestic industry causing price undercutting in the Indian market. The domestic industry has submitted that the benchmark for the Indian producers' prices is the import prices from China. There is no viable substitute to this product. Demand for the product was showing significant jump and could not have been a factor responsible for price suppression faced by the domestic industry. It is, thus, evident that the only factors responsible for the domestic industry prices are the import prices of the product from China and the cost of production of the domestic industry.

#### h) Magnitude of Dumping Margin

**65.** The Authority notes that dumping margin from the subject country is positive both in the POI and the post POI.

## i) Ability to raise fresh Investment

**66.** The domestic industry is a multi product company. Therefore, dumping of the subject goods has not affected the ability of the domestic industry to raise capital.

# j) Growth

**67.** The analysis of the growth of the domestic industry over the previous years in respect of some important parameters reflects the following trend:

Growth	UOM	2009-10	2010-11	2011-12	POI
Production	%	-	37%	6%	7%
Domestic Sales Volume	%	-	35%	-6%	-22%
Capacity Utilization	%	-	6.91%	-5.61%	-0.98%
Selling price domestic	%	-	-3%	27%	2%
Profit Before Tax	%	-	-88%	776%	-22%
Cash Profit	%	-	-71%	301%	-19%
Return on capital employed (NFA basis)	%	-	-9.59%	7.16%	-1.70%
Market Share	%	-	14.05%	0.61%	-0.97%

**68.** The Authority notes that negative trend is observed in terms of the majority of parameters such as sales, capacity utilization, profits, return on investment, cash profits, market share etc. All these parameters show negative growth in the POI as compared to previous year 2011-12. This situation is despite anti dumping duty in force.

#### k) Conclusion on Injury

- **69.** In view of the above, the Authority concludes that:
  - There is continued dumping of the product under consideration from China. While the volume of imports of Diclofenac Sodium has declined in the POI, imports of intermediate product, Indolinone have increased in the POI;

- b) Even though the domestic industry was able to improve its production to some extent, the increase was disproportionate to the increase in capacity.
- c) The domestic industry is suffering price suppression.
- d) Whereas both cost of production and selling price increased, the increase in selling price was lower than the increase in cost of production.
- e) The landed price of imports was above the NIP of the domestic industry in the POI and, thus, the imports were not resulting in price underselling in the market. Price underselling is negative and thus shows no injury to the domestic industry in the POI.

## IV. Likelihood Of Continuation Or Recurrence Of Dumping & Injury

- 70. The domestic industry in its submissions claimed that the requirement under a sunset review is to examine whether revocation of anti dumping duty is likely to lead to continuance or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. All such factors brought to the notice of the Authority have been examined to find if there is a likelihood of continuation of dumping and injury in the event of withdrawal of the duty. The Authority has determined whether the subject goods are likely to continue to enter the Indian market at dumped prices in the event of withdrawal of anti dumping duties and whether injury to the domestic industry is likely due to these dumped imports if the duty is removed.
- 71. In addition to the examination of continued dumping and injury, likelihood of continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry has also been examined by the Authority on the basis of information and evidence as submitted by various interested parties during the course of the investigations.
- 72. With respect to likely dumping and injury to the domestic industry in the event of cessation of anti-dumping duty, the petitioners have claimed that:—
  - Cessation of anti-dumping duty is likely to lead to dumping and injury to the domestic industry. This is clearly established by significant price undercutting, price underselling in the post POI period, significant capacities in China and import price of Indolinone.
  - ii) India and China are the only two known countries having production facilities for the product under consideration. Petitioners are competing with the Chinese producers in the global market and, therefore, have knowledge about their excessive capacities and low prices at which they can export the product.
  - iii) The export orientation of some of the Chinese suppliers suggests that revocation of anti-dumping duty would open the floodgates for dumping the material in the Indian market.
  - iv) The anti dumping duty in force has been effective in keeping a check on the volume of imports of Diclofenac Sodium from China.
  - v) The fact that the Chinese producers are exporting Indolinone and the price at which the Chinese producers are exporting Indolinone in the Indian market clearly establishes the price at which the Chinese are likely to export the product under consideration in the absence of anti-dumping duty.
  - vi) The increase in import price and consequently decline in the import volumes in the present period is thus artificial and is governed by the fact of impending sunset review.
  - vii) The prices prevailing in Indian market are quite attractive for the foreign producers to export significant volumes, in case anti dumping duty is revoked.
  - viii) The landed price of imports in the post POI period is far lower than the selling price and NIP of the domestic industry. Imports were already causing price suppression. Resultantly, the domestic industry was unable to increase its prices when the costs were increasing in the current POI.
  - ix) Should the present anti-dumping duty on Diclofenac Sodium be revoked, there would definitely be increase in the volume of imports of Diclofenac Sodium from the subject country.
  - x) The import price of DFS increased in the present POI but declined significantly in the post POI, as is seen from the table below.

Year	China PR				
	Volume (MT)/DFS	Price (Rs./kg)			
2009-10	142.21	295.33			
2010-11	47.38	352.43			
2011-12	88.20	436.41			
POI (Oct 2011-Dec 2012)	63.30	512.90			
2012-13	29.10	543.46			
Apr-13	12.70	448.56			
May-13	16.70	439.12			
Jun-13	19.50	431.21			

xi) The price of Indolinone and DFS increased in the POI and declined in the post POI. Therefore, this supports the contention of the domestic industry that the price of DFS in the POI is not representative for determination of likely situation in the event of cessation of anti-dumping duty.

Year		Import price Rs./kg
	Indolionone	DFS
2009-10	331.55	295.33
2010-11	345.83	352.43
2011-12	390.76	436.41
POI (Oct2011-Dec2012)	438.94	512.90
2012-13	450.59	543.46

xii) The Chinese producers are holding significant capacities, as would be seen from the table below showing capacities with the known Chinese producers. Petitioners further submit that this is not exhaustive list of Chinese producers.

S. No.	Company	Supply Ability
		(Mt/ Year)
1	Zhejiang Chemicals Import & Export Corp.	1,200
2	The TNN Development Limited	6,240
3	Hangzhou Uniwise International Co., Ltd	1,200
4	Jiaxing Suns Int'l Trade Co., Ltd.	1,000
5	Hangzhou Ruijiang	520
6	Henan Tianfu Chemicals	2,000
7	China Foodpharm Group Co Ltd.	1,500
8	Tangying Yongqi	1,000
9	Total Supply Ability	14,660

xiii) Further, the table below shows the export orientation of the known Chinese producers, which clearly shows high export orientation of the Chinese producers.

S. No.	Company	Export %
1	China Foodpharm Group Co. Ltd	71%-80%
2	Yan'an Changtai Pharmaceuticals Co. Ltd.	31%-40%
3	Anhui Suntran Chemicals Co. Ltd	71%-80%
4	Hubei Yuancheng Pharmaceutical Co. Ltd	41%-50%
5	Suzhou Toprun Imp & Exp Trading Co. Ltd.	91%-100%

- xiv) Though, the production and sales volume of the domestic industry has increased, the profitability per unit has declined in the post POI period.
- xv) Cessation of anti-dumping duty is likely to lead to dumping and injury to the domestic industry.
- xvi) In the event of revocation of the anti-dumping duty, the product is likely to be dumped more intensively and undercut the prices of the domestic industry more significantly.

### **Examination by the Authority**

73. The present investigation is a sunset review of anti-dumping duties imposed on the imports of subject goods from China. Under the Rules, the Authority is required to determine whether continued imposition of anti dumping duty is warranted. This also requires examination of whether the duty imposed is serving the intended purpose of eliminating injurious dumping. In the present investigation, there are continued dumped imports. Further, the dumping margin in the original as well as the present investigation is significant and that there are favorable market conditions in the Indian market as far as demand and price for the subject goods are concerned. The Authority considers that there is no reason to believe that dumping is not likely to intensify if the duty is revoked. The following analysis shows the likelihood of dumping and consequent injury to the domestic industry in the event of revocation of the duty.

## Level of current and past dumping and injury margins

- 74. The Authority notes that:
- i) The present investigation has shown positive dumping margin in the POI and the post POI. The past investigation had also shown positive dumping. The volume of import has remained significant.
- ii) The Authority also notes that the prices in the current period show positive dumping margin and are indicative of likely situation with cessation of anti-dumping duty where the dumping is likely to intensify.
- iii) The injury margin though negative in the POI is positive in the post POI. Dumping margin is also positive in the post POI.

## **Export Orientation and Supply Ability of Chinese Suppliers**

iv) The Authority notes that the Chinese exporters are largely export oriented. Supply ability of the Chinese producers is far higher than the total Indian demand. Considering the fact that the product is produced only in China and India, cessation of anti dumping duty is likely to lead to intensified dumping of the product in the Indian market.

## Price attractiveness of Indian market

v) The Authority notes that the dumping and injury margin in the post POI is positive showing the price attractiveness of the Indian Market.

# **Significant exports to Third Countries**

vi) Exports of product under consideration from China to third countries are significant. In fact the product is produced mainly in China and India. The Authority further notes that though as far as imports of the subject goods into India in the post POI are concerned, the dumping and injury margins in the post POI are positive and thus show likely dumping of the subject goods in India causing likely injury to the domestic industry, yet the Authority has analysed the World Trade Atlas Data and the analysis shows that the majority of exports from China to third countries in the post POI are much below the export price to India. Therefore, in the event of expiry of anti-dumping duty, dumping of the product under consideration from China is likely to increase.

# 75. Based on the above, the Authority holds that:—

- i) the Chinese producers have been exporting the product at dumping prices n the POI and post POI;
- ii) The import price of DFS in the post POI is below the post POI NIP showing positive injury margin in the post POI
- iii) Chinese producers are holding significant capacities for the product under consideration;
- iv) Chinese producers are having very high export orientation, and dumped imports have continued to enter in the country even after the anti-dumping duty has been in force.
- v) Price suppression indicates the likely adverse price effect of dumped imports on domestic industry in the event of expiry of the anti dumping duty in force. In the event of revocation of anti-dumping duties, the domestic industry would face threat of imports from the subject country.
- vi) The import price of the product in the post POI period is materially lower than the selling price of the domestic industry, thus showing that the imports from China are likely to lead to further suppressing effect on the prices of the domestic industry in the market.
- vii) Dumping of the product under consideration is likely to intensify from the subject country, should the current anti-dumping duty be revoked; Price undercutting is positive.
- viii) The import price of the product in the post POI period to majority of the third countries is materially lower than the selling price of the domestic industry, thus showing that in case of the diversion of these exports to India, the same are likely to cause injury to the domestic industry.
- ix) In view of the above, in case of expiry of existing duty, exporters from China would further channelize their output in the Indian market, as they are already holding excessive capacities and are in fact selling subject goods to third countries at substantially lower prices. All such circumstances would result in likelihood of injury to the Domestic Industry.
- x) It is, therefore, concluded that the dumping and injury is likely to continue if the anti-dumping duty is revoked.

## V. Causal link

76. Annexure-II to the Rules provides as follows with regard to Causal Link:

"It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the Designated Authority. The Designated Authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter-alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."

- 77. The Authority examined whether other factors listed under the Rules caused injury to the domestic industry.
  - a) Volume and value of imports not sold at dumping prices:
- 78. It is noted that the domestic industry is facing injury from dumped imports from China. Imports from other countries are not significant in volume. The domestic industry contended that the product under consideration is produced only in India and China. It cannot, therefore, be said that the volume of imports not sold at dumping prices have caused injury to the domestic industry.

#### b) Contraction in demand:

- 79. Demand of the product under consideration in the Indian market continues to be significant. Further, India and China are the only two countries known to be producing the product under consideration. Cessation of anti dumping duty under the situation is likely to lead to intensified injury to the domestic industry.
  - c) Changes in the patterns of consumption:
- **80.** The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in the pattern of consumption is not a factor that could have contributed to the injury to the domestic industry.
  - d) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:
- **81.** There is no trade restrictive practice which could have contributed to the claimed injury to the domestic industry.
  - e) Developments in technology:
- **82.** Technology for production of the product has not undergone any change nor are there any likely changes in the coming future. Developments in technology are, therefore, not a factor of injury.
  - f) Export performance:
- **83.** The petitioners export the product under consideration. The export volume has increased over the injury period. Moreover, information relating to domestic sales has been taken into consideration for assessment of injury to the extent possible.

Particulars	Unit	2009-10	2010-11	2011-12	Oct'11-Dec'12
Export Sales	MT	365	468	392	710

- g) Performance of other products produced and sold by the domestic industry:
- **84.** The petitioners are multi product companies. The information provided for the product under consideration does not contain any information of other products. The Authority has relied upon information with regard to product under consideration only for the present purpose. Therefore, the performance of other products did not cause the claimed injury to the domestic industry.
- **85.** In view of the foregoing, the Authority holds that other factors listed under the Rules have not caused claimed injury to the domestic industry. The Authority further examined factors that establish that injury to the domestic industry is caused by continued dumping.
- (i) Imports from the subject country are likely to cause significant price undercutting in the event of expiry of antidumping duty.
- (ii) The price of imports in the post POI period and import price of Indolinone during the injury period and thereafter clearly shows that the imports are likely to cause significant price undercutting and underselling in the event of cessation of anti dumping duty.
- (iii) Existence of significant price undercutting in the event of expiry of anti-dumping duty is likely to result in consumers switching over to the imported material.
- (iv) The anti-dumping duty in force has been effective to significant extent in keeping a check on the volume of imports from China in the period of investigation and, therefore, there is sufficient reason to believe that the volume would definitely surge in the event of revocation of anti dumping duties; given the fact that the producers in the subject country are holding sufficient capacities.
- (v) In case duty is revoked and consequently imports from the subject country increase, the Domestic Industry would be forced to reduce the prices of the product concerned significantly.
- (vi) In the event of cessation of anti dumping duty, the domestic industry would be forced to reduce the prices. Its natural impact would be on the profitability of the domestic industry. Decline in profits would lead to decline in cash flow and return on investment. If the domestic industry chooses to maintain its normal price levels, it is likely to lose its sales volume as consumers would increasingly switch over to the imports.

**86.** It is, thus, concluded that the injury to the domestic industry is likely in the event of cessation of anti-dumping duty. The product is likely to be exported at dumping prices in the event of cessation of anti-dumping duty and the domestic industry is likely to suffer injury in case the present duty is not extended further.

#### Magnitude of injury and injury margin

87. The Authority has determined the non-injurious price for the domestic industry on the basis of principles laid down in the Rules. This non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject imports from the subject country to determine injury margin. The injury margin has, thus, been worked out as follows:

	POI	Post POI
Particular	USD/MT	USD/MT
Non Injurious Price (NIP)	***	***
Landed Price	10.31	8.06
Injury Margin	(***)	***
Injury Margin-%	(***)	***
Injury Margin-% Range	(0-10)	15-25

# **Indian Industry's interest:**

88. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured by using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

### G. Post Disclosure Statement submissions by the Interested Parties

#### G 1. Post Disclosure Statement submissions by the opposing Interested Parties

**89.** None of the exporters/importers/users and other opposing interested parties has made any post Disclosure Statement submissions.

## G 2. Post Disclosure Statement submissions by the Domestic Industry

**90.** Following are in brief the post Disclosure Statement submissions made by the domestic industry:

- i) None of the foreign producers has cooperated or even participated in the review investigations.
- The imports have continued to enter at dumping prices. The volume of imports of Indolinone have increased.
- iii) Price undercutting and price underselling is significantly positive in the absence of anti-dumping duty.
- iv) NIP may be re-determined considering actual cost of production of the domestic industry and return on net present value of the investment.

- v) Both dumping margin and injury margin are significant and positive in the post POI, implying likelihood of dumping and injury.
- vi) The anti-dumping duty on Diclofenac Sodium is required to be extended further for a period of five years.
- vii) Duty may be imposed in fixed form and in US \$ terms.

# **G 3.** Examination by the Authority

**91.** The Authority has reached to the conclusion that the above arguments of the domestic industry are repetitive and have already been dealt with by the Authority in the Disclosure Statement earlier and have also been dealt with again in the Final Finings Notification under appropriate headings.

## H. Conclusion and Recommendation

- 92. The Authority notes that none of exporters from China PR and importers/users and other opposing interested parties in India participated in the investigation, i.e., they neither submitted post initiation responses nor participated in the Oral Hearing or made any post Disclosure Statement submissions. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the domestic industry and facts available before the Authority and on the basis of above analysis including analysis of likelihood of continuation of dumping and injury and post Disclosure Statement submissions made by the Domestic Industry, the Authority concludes and recommends that:
  - a. There is continued dumping of the product under consideration from China. While the volume of imports of Diclofenac Sodium has declined in the POI, imports of intermediate product, Indolinone have increased in the POI.
  - b. Even though the domestic industry was able to improve its production to some extent, the increase was disproportionate to the increase in capacity.
  - c. The domestic industry is suffering price suppression.
  - d. Whereas both cost of production and selling price increased, the increase in selling price was lower than the increase in cost of production.
  - e. The Chinese producers have been exporting the product at dumping prices in the POI and post POI.
  - f. The import price of DFS in the post POI is below the post POI NIP showing positive injury margin in the post POI.
  - g. Chinese producers are holding significant capacities for the product under consideration.
  - h. Chinese producers are having very high export orientation, and dumped imports have continued to enter in the country even after the anti dumping duty has been in force.
  - Price suppression indicates the likely adverse price effect of dumped imports on domestic industry in the event of expiry of the anti-dumping duty in force. In the event of revocation of anti-dumping duties, the domestic industry would face threat of imports from the subject country.
  - j. The import price of the product in the post POI period is materially lower than the selling price of the domestic industry, thus showing that the imports from China are likely to lead to further suppressing effect on the prices of the domestic industry in the market.
  - k. Dumping of the product under consideration is likely to intensify from the subject country, should the current anti-dumping duty be revoked; Price undercutting is positive.
  - 1. The import price of the product in the post POI period to majority of the third countries is materially lower than the selling price of the domestic industry, thus showing that in case of the diversion of these exports to India, the same are likely to cause injury to the domestic industry.
  - m. In view of the above, in case of expiry of existing duty, exporters from China would further channelize their output in the Indian market, as they are already holding excessive capacities and are in fact selling subject goods to third countries at substantially lower prices. All such circumstances would result in likelihood of injury to the Domestic Industry.

- n. It is, therefore, concluded that the dumping and injury is likely to continue if the anti-dumping duty is revoked.
- o. The Authority, thus, in order to remove likely injury to the domestic industry, considers it necessary to recommend continuation of definitive anti-dumping duty on all imports of the subject goods from the subject country levied by the Central Government *vide* its Notification No. 91/2008-Customs dated 30th July, 2008, with the modification that the duty levied *vide* Notification No. 91/2008-Customs dated 30th July, 2008 as Rs. 144 per kg be modified to read as US \$ 2715 per MT.
- 93. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
- **94.** An appeal against the order of the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.
  - J. K. DADOO, Designated Authority